



AstroAnkara

नमूना रिपोर्ट

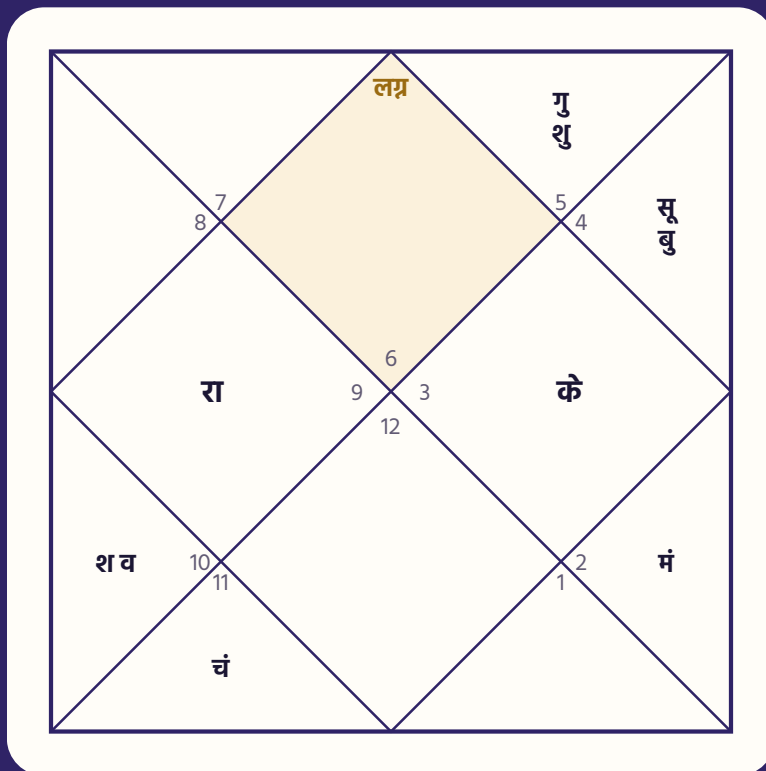
संपूर्ण कुंडली रिपोर्ट

व्यक्तिगत वैदिक ज्योतिष रिपोर्ट

इनके लिए

नमूना

जन्म: 15 अग० 1992, 10:30 · Mumbai



लग्न

कन्या

चंद्र राशि

कुंभ

जन्म नक्षत्र

शतभिषा

विषय सूची

- | | | | |
|----|-----------------------------------|----|------------------------------|
| 01 | एक नज़र में आपकी कुंडली | 14 | जीवन के क्षेत्र विस्तार से |
| 02 | जन्म विवरण और अवकहड़ा चक्र | 15 | अभी चल रही दशा |
| 03 | आपका स्वभाव | 16 | आपके अगले 12 महीने |
| 04 | आपकी कुंडली के नौ ग्रह | 17 | वर्षफल: आपका 35वाँ वर्ष |
| 05 | ग्रहों का विवरण और मैत्री | 18 | जीवन भर की दशाएँ |
| 06 | वर्ग कुंडलियाँ | 19 | योगिनी दशा |
| 07 | षोडशवर्ग: सभी सोलह वर्ग कुंडलियाँ | 20 | अष्टकवर्ग |
| 08 | भाव चलित कुंडली | 21 | मंगल दोष और शनि |
| 09 | आपकी कुंडली के योग और दोष | 22 | आपके लिए वर्ष 2027 |
| 10 | आपके बारह भाव | 23 | आपकी कुंडली के उपाय |
| 11 | विवाह और जीवनसाथी | 24 | रत्न और शुभ बातें |
| 12 | करियर: नौकरी या व्यापार | 25 | आपके अंक: मूलांक और भाग्यांक |
| 13 | संपत्ति, घर और वाहन | 26 | इस रिपोर्ट के बारे में |

ये वे अंतर्दशाएँ हैं जिनके स्वामी आपकी कुंडली में इस क्षेत्र से सबसे ज़्यादा जुड़े हैं, और जब गुरु का गोचर उसी भाव को बल दे तो वे और प्रबल होती हैं। ये अनुकूल परिस्थितियों का समय बताती हैं, निश्चितता नहीं।

1 एक नज़र में आपकी कुंडली

लग्न

कन्या (Virgo)

26° 45' · चित्रा 2

चंद्र राशि

कुंभ (Aquarius)

18° 12' · शनि

जन्म नक्षत्र

शतभिषा

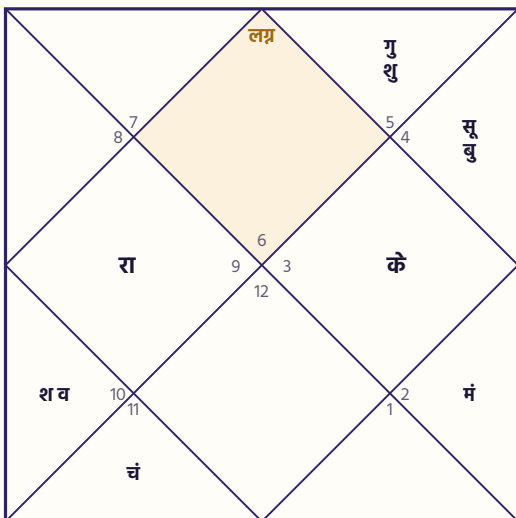
चरण 4

सूर्य राशि (वैदिक)

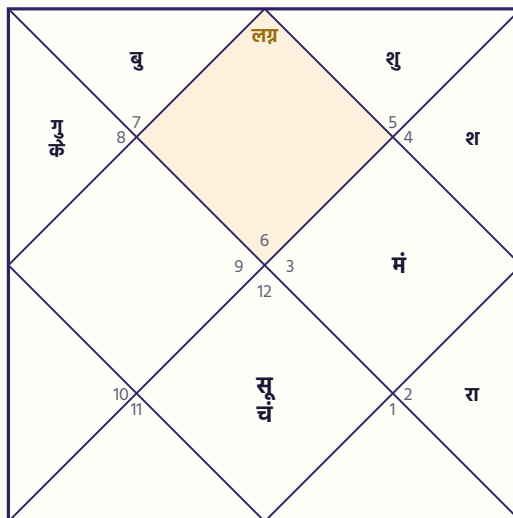
कर्क (Cancer)

28° 51'

जन्म कुंडली (D1)



नवांश कुंडली (D9)



उत्तर भारतीय शैली: ऊपर का बीच वाला खाना पहला भाव है; अंक राशियाँ हैं (1 = मेष)। व = वक्रि।

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव	टिप्पणी
लग्न	कन्या	26° 45'	चित्रा 2	1	
सूर्य	कर्क	28° 51'	आश्लेषा 4	11	
चंद्र	कुंभ	18° 12'	शतभिषा 4	6	
मंगल	वृषभ	19° 07'	रोहिणी 3	9	
बुध	कर्क	12° 28'	पुष्य 3	11	
गुरु	सिंह	24° 12'	पूर्व फाल्गुनी 4	12	
शुक्र	सिंह	16° 00'	पूर्व फाल्गुनी 1	12	
शनि	मकर	20° 47'	श्रवण 4	5	वक्रि, स्वराशि
राहु	धनु	4° 00'	मूल 2	4	
केतु	मिथुन	4° 00'	मृगशिरा 4	10	

2 जन्म विवरण और अवकहड़ा चक्र

आपके जन्म के क्षण का पंचांग, और अवकहड़ा चक्र: आपके चंद्रमा का पारंपरिक सार, जो नामकरण, मिलान और मुहूर्त में काम आता है।

जन्म पंचांग

तिथि द्वितीया (कृष्ण पक्ष)	वार (सूर्योदय से) शनिवार
जन्म नक्षत्र शतभिषा 4	योग अतिगण्ड
करण गर	अयनांश (लाहिड़ी) 23° 45'
सूर्योदय 6:19 am	सूर्यास्त 7:06 pm

अवकहड़ा चक्र

वर्ण शूद्र	वश्य मानव
योनि अश्व	गण राक्षस
नाड़ी आदि	तत्त्व वायु
राशि स्वामी शनि	नक्षत्र स्वामी राहु
नामाक्षर सू (Su)	चंद्र राशि कुंभ

3 आपका स्वभाव

कन्या लग्न

कन्या लग्न सटीक, विश्लेषणात्मक और मददगार स्वभाव देता है। लग्नेश बुध इस राशि में उच्च के भी होते हैं, इसलिए बारीकियाँ, व्यवस्था और उपयोगी हुनर आसानी से आते हैं। आप जो भी छूते हैं उसे बेहतर बनाते हैं; चुनौती है आत्म-आलोचना और चिंता।

कन्या पृथ्वी तत्व की राशि है जिसके स्वामी बुध हैं, जो यहाँ स्वराशि और उच्च दोनों के होते हैं। इसका प्रतीक अनाज और दीपक लिए एक कन्या है, जो पवित्रता, कौशल और सेवा का प्रतीक है। वैदिक कुंडली में कन्या काम, स्वास्थ्य, दिनचर्या और चीज़ों को बेहतर बनाने की लगन को दर्शाती है।

कन्या में शुक्र नीच के होते हैं, जो दिखाता है कि यह राशि भोग से ज़्यादा उपयोगिता को महत्व देती है। जिनकी चंद्र राशि या लग्न कन्या हो, वे आमतौर पर विश्लेषणात्मक, व्यावहारिक और मददगार होते हैं, बारीकियों पर नज़र के साथ। उनकी चुनौती पूर्णतावाद और चिंता है।

आपकी खूबियाँ

- विश्लेषणात्मक और सटीक
- मेहनती और भरोसेमंद
- मददगार और सेवाभावी
- व्यावहारिक समस्या-समाधान
- स्वास्थ्य और बारीकियों के प्रति सजग

किन बातों पर काम करें

- पूर्णतावाद
- आत्म-आलोचना और चिंता
- ज़रूरत से ज़्यादा विश्लेषण
- दूसरों की आलोचना

काम और करियर

कन्या उस काम में उत्कृष्ट है जिसमें सटीकता और कौशल चाहिए: लेखा, डेटा विश्लेषण, शोध, चिकित्सा, पोषण, संपादन, आईटी और गुणवत्ता नियंत्रण। ये वे लोग हैं जो व्यवस्थाओं को चलाते हैं। बिना मानकों वाला अव्यवस्थित माहौल उन्हें परेशान करता है।

प्रेम और रिश्ते

कन्या व्यावहारिक देखभाल से प्रेम दिखाती है: ठीक करना, व्यवस्थित करना, याद रखना। वे वफ़ादार और विनम्र होते हैं, और ऐसा साथी चाहते हैं जो सच्चाई को महत्व दे। अपने मानकों में ढील देना और भावनाएँ खुलकर कहना प्रेम को आसान बनाता है।

सेहत

परंपरा में कन्या आँतों और पाचन तंत्र की स्वामी है। पाचन की संवेदनशीलता, घबराहट से पेट खराब होना और तनाव से जुड़ी समस्याएँ इसके पारंपरिक कमज़ोर बिंदु हैं; समय पर भोजन और विश्राम कन्या के लिए ज़्यादातर से अधिक मायने रखते हैं।

कुंभ राशि में चंद्रमा

कुंभ राशि का चंद्रमा भावनाओं को विचारों के ज़रिए समझता है और उसे खुली जगह चाहिए। आप मिलनसार, निष्पक्ष और किसी उद्देश्य से जुड़ने वाले हैं, पर अपनी ही भावनाओं से दूरी महसूस कर सकते हैं। समान सोच वालों के साथ समय आपको समझा हुआ महसूस कराता है।

मन और भावनाएँ

चंद्रमा कुंभ में होने से आपका मन मौलिक, तटस्थ और मानवतावादी है। आप बड़ी तस्वीर देखते हैं, मित्रता और स्वतंत्रता को महत्व देते हैं, और भावनाओं को विचारों के ज़रिए समझते हैं।

घर और माता

आपको ऐसा घर पसंद है जो स्वतंत्रता का सम्मान करे और मित्रों का स्वागत करे। माता से संबंध मित्रवत पर अनोखा हो सकता है, और समुदाय परिवार जैसा लग सकता है।

शांति और संतुलन

जिन उद्देश्यों में आप विश्वास करते हैं, सीखने और समान सोच वाले मित्रों से शांति मिलती है। आपकी चुनौती भावनात्मक दूरी है; केवल राय नहीं, सीधे भावनाएँ बाँटना रिश्तों को गहरा करता है।

शतभिषा नक्षत्र में जन्म

स्वतंत्र, रहस्यमय और उपचारक, विज्ञान, शोध या चिकित्सा की ओर खिंचते हैं। आप अक्सर वह देख लेते हैं जो दूसरे अनदेखा करते हैं। इसके देवता: वरुण (ब्रह्मांडीय जल)।

आपका स्वभाव

शतभिषा, यानी 'सौ वैद्य', स्वतंत्र, वैज्ञानिक और निजी स्वभाव वाला मन देता है। आप स्वाभाविक रूप से समस्याएँ सुलझाने और उपचार करने वाले हैं।

करियर और धन

चिकित्सा, शोध, तकनीक, खगोल, ज्योतिष और वैकल्पिक उपचार सूट करते हैं।

रिश्ते और सेहत

आपको एकांत प्रिय है और रिश्तों में जगह चाहिए। रक्त संचार और पैरों का ध्यान रखें।

आपका जन्म इस नक्षत्र के चौथे चरण में हुआ, जिसका पारंपरिक नामाक्षर सू (Su) है।

4

आपकी कुंडली के नौ ग्रह

हर ग्रह का भाव आपके लग्न से गिना गया है (संपूर्ण राशि भाव)।

सूर्य Sun

कर्क में - ग्यारहवें भाव में

कर्क में सूर्य देखभाल करने वाला, रक्षक स्वभाव और घर-परिवार से गहरा लगाव देते हैं। भावनात्मक सुरक्षा से आपका आत्मविश्वास बढ़ता है, और आप दूसरों का पोषण करके नेतृत्व करते हैं।

ग्यारहवें भाव में सूर्य लाभ, प्रभावशाली मित्र और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति देते हैं। प्रतिष्ठा के साथ आय बढ़ती है और संपर्क मदद करते हैं। चापलूसों के बजाय आपके मूल्यों वाले मित्र चुनें।

सूर्य आश्लेषा नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी बुध हैं, जो आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं, इसलिए बुध की स्थिति भी तय करती है कि सूर्य आपके लिए कैसे काम करते हैं। इनके साथ इसी राशि में बुध हैं, इसलिए कुंडली के इस हिस्से में इनके प्रभाव मिल जाते हैं। इन पर शनि की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये आपके बारहवें भाव के स्वामी हैं (खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव सूर्य की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2074 - जन० 2080।

चंद्र Moon

कुंभ में - छठे भाव में

कुंभ में चंद्रमा तटस्थ, मौलिक और मानवतावादी मन देते हैं। मित्रता और उद्देश्य मायने रखते हैं; केवल विचार नहीं, अपनी भावनाएँ भी बाँटें।

छठे भाव में चंद्रमा मन को चिंताशील और तनाव के प्रति संवेदनशील बना सकते हैं, और सेहत भावनाओं से जुड़ी रहती है। सेवा, नर्सिंग, देखभाल और दूसरों की समस्याएँ सुलझाने के काम अनुकूल हैं। दिनचर्या और शांत आदतें आपकी रक्षा करती हैं।

चंद्र शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी राहु हैं, जो आपके चौथे भाव में बैठे हैं, इसलिए राहु की स्थिति भी तय करती है कि चंद्र आपके लिए कैसे काम करते हैं। इन पर गुरु, शुक्र और केतु की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं (लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव चंद्र की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2080 - जन० 2090।

मंगल Mars

वृषभ में • नौवें भाव में

वृषभ में मंगल स्थिर, दृढ़ ऊर्जा देते हैं जो धन और संपत्ति बनाने में लगती है। आप देर से नाराज़ होते हैं पर एक बार भड़कें तो अड़ जाते हैं।

नौवें भाव में मंगल दृढ़ विश्वास और अपनी आस्था के लिए लड़ने की ऊर्जा देते हैं। आप दूर यात्रा कर सकते हैं या धार्मिक या शैक्षिक कार्यों में नेतृत्व कर सकते हैं। गुरुओं या पिता से मतभेद संभव है; दूसरे विचारों का सम्मान करें।

मंगल रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी चंद्र हैं, जो आपके छठे भाव में बैठे हैं, इसलिए चंद्र की स्थिति भी तय करती है कि मंगल आपके लिए कैसे काम करते हैं। ये आपके तीसरे भाव और आठवें भाव के स्वामी हैं (साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव मंगल की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2090 – जन० 2097।

बुध Mercury

कर्क में • ग्यारहवें भाव में

कर्क में बुध भावनाओं से रंगी सोच, अच्छी याददाश्त और कल्पनाशक्ति देते हैं। आप सहानुभूति से बात करते हैं।

ग्यारहवें भाव में बुध व्यापार, संपर्क, मित्रों और समझदार विचारों से लाभ देते हैं। आपके बहुत से परिचित हैं और आप संपर्कों का लाभ उठाना जानते हैं। व्यापारिक आय के लिए अच्छी स्थिति।

बुध पुष्य नक्षत्र के तीसरे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी शनि हैं, जो आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं, इसलिए शनि की स्थिति भी तय करती है कि बुध आपके लिए कैसे काम करते हैं। इनके साथ इसी राशि में सूर्य हैं, इसलिए कुंडली के इस हिस्से में इनके प्रभाव मिल जाते हैं। इन पर शनि की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये आपके पहले भाव और दसवें भाव के स्वामी हैं (स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव बुध की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2030 – जन० 2047।

गुरु Jupiter

सिंह में • बारहवें भाव में

सिंह में गुरु गरिमामय, उदार नेतृत्व और सम्मान देते हैं। सरकार, शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए अच्छे।

बारहवें भाव में गुरु आध्यात्मिक, दानशील स्वभाव और मोक्ष, विदेश और संस्थाओं में सेवा में रुचि देते हैं। अच्छे कार्यों पर खर्च की संभावना है। कठिन समय में आपकी आस्था आपकी रक्षा करती है।

गुरु पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी शुक्र हैं, जो आपके बारहवें भाव में बैठे हैं, इसलिए शुक्र की स्थिति भी तय करती है कि गुरु आपके लिए कैसे काम करते हैं। इनके साथ इसी राशि में शुक्र हैं, इसलिए कुंडली के इस हिस्से में इनके प्रभाव मिल जाते हैं। इन पर चंद्र, मंगल और राहु की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये आपके चौथे भाव और सातवें भाव के स्वामी हैं (घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनकी महादशा जन० 1995 – जन० 2011 तक रही।

शुक्र Venus

सिंह में • बारहवें भाव में

सिंह में शुक्र प्रेम में आपको स्नेही, उदार और नाटकीय बनाते हैं, विलासिता, रचनात्मकता और प्रशंसा की चाह के साथ।

बारहवें भाव में शुक्र, जहाँ वे परंपरा में बलवान माने जाते हैं, सुख, अच्छी नींद, भोग और भक्ति देते हैं। यात्रा और विलासिता पर खर्च की संभावना है, और विदेशी संबंध प्रेम या धन ला सकते हैं।

शुक्र पूर्व फाल्गुनी नक्षत्र के पहले चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी शुक्र हैं, जो आपके बारहवें भाव में बैठे हैं, इसलिए शुक्र की स्थिति भी तय करती है कि शुक्र आपके लिए कैसे काम करते हैं। इनके साथ इसी राशि में गुरु हैं, इसलिए कुंडली के इस हिस्से में इनके प्रभाव मिल जाते हैं। इन पर चंद्र, मंगल और राहु की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये आपके दूसरे भाव और नौवें भाव के स्वामी हैं (धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव शुक्र की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2054 – जन० 2074।

शनि Saturn

मकर में • पाँचवें भाव में • स्वराशि • वक्री

अपनी राशि मकर में शनि महत्वाकांक्षा, अनुशासन और संगठन की शक्ति देते हैं, लगातार मेहनत से स्थिर उन्नति के साथ।

पाँचवें भाव में शनि गंभीर, व्यावहारिक बुद्धि और अनुशासित पढ़ाई से सफलता देते हैं। संतान देर से हो सकती है या ज़िम्मेदारी माँग सकती है। सट्टे से बचें; धीमे, सोचे-समझे निवेश बेहतर रहते हैं।

शनि श्रवण नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी चंद्र हैं, जो आपके छठे भाव में बैठे हैं, इसलिए चंद्र की स्थिति भी तय करती है कि शनि आपके लिए कैसे काम करते हैं। इन पर सूर्य और बुध की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। ये वक्री हैं, इसलिए इनका फल अक्सर भीतर की ओर, देर से या दूसरी कोशिश में मिलता है। ये आपके पाँचवें भाव और छठे भाव के स्वामी हैं (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी), इसलिए इनकी स्थिति जीवन के इन क्षेत्रों को गढ़ती है। इनका प्रभाव शनि की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2011 – जन० 2030।

राहु Rahu

धनु में • चौथे भाव में

धनु में राहु अलग तरह की आस्थाएँ और अर्थ की खोज देते हैं; विदेश यात्रा और अध्ययन से विकास होता है।

चौथे भाव में राहु घरेलू जीवन को अस्थिर कर सकते हैं या घर बदलना, विदेश में रहना और संपत्ति के असामान्य मामले ला सकते हैं। मन की शांति दूर लग सकती है। ज़मीन से जुड़ने वाली साधना और सरल दिनचर्या मदद करती है।

राहु मूल नक्षत्र के दूसरे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी केतु हैं, जो आपके दसवें भाव में बैठे हैं, इसलिए केतु की स्थिति भी तय करती है कि राहु आपके लिए कैसे काम करते हैं। इन पर मंगल, गुरु और केतु की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। छाया ग्रह होने से ये किसी राशि के स्वामी नहीं हैं; ये जिस राशि में बैठे हैं उसके स्वामी गुरु के ज़रिए काम करते हैं। इनकी महादशा अग० 1992 – जन० 1995 तक रही।

केतु Ketu

मिथुन में • दसवें भाव में

मिथुन में केतु आपकी सोच को तर्क से ज़्यादा अंतर्ज्ञानी बनाते हैं; आपको छोटी बातों से ज़्यादा गहरा अध्ययन पसंद है।

दसवें भाव में केतु असामान्य या बदलते करियर और प्रतिष्ठा के प्रति उदासीन दृष्टि ला सकते हैं। तकनीकी, शोध या आध्यात्मिक काम अनुकूल है। सफलता तब आती है जब काम में अर्थ हो।

केतु मृगशिरा नक्षत्र के चौथे चरण में हैं। इस नक्षत्र के स्वामी मंगल हैं, जो आपके नौवें भाव में बैठे हैं, इसलिए मंगल की स्थिति भी तय करती है कि केतु आपके लिए कैसे काम करते हैं। इन पर राहु की दृष्टि है, जो इनमें अपना प्रभाव जोड़ती है। छाया ग्रह होने से ये किसी राशि के स्वामी नहीं हैं; ये जिस राशि में बैठे हैं उसके स्वामी बुध के ज़रिए काम करते हैं। इनका प्रभाव केतु की महादशा में सबसे अधिक रहता है, जन० 2047 – जन० 2054।

5 ग्रहों का विवरण और मैत्री

हर ग्रह की सटीक स्थिति, उसके नक्षत्र स्वामी, अस्त होना (सूर्य के बहुत पास होने से पूरा बल न दिखा पाना) और बालादि अवस्था (राशि में ग्रह की 'उम्र', जिससे तय होता है कि वह कितना फल देगा) के साथ।

ग्रह	नक्षत्र स्वामी	अस्त	अवस्था	स्थिति
सूर्य	बुध	—	बाल	—
चंद्र	राहु	—	वृद्ध	—
मंगल	चंद्र	—	कुमार	—
बुध	शनि	—	युवा	—
गुरु	शुक्र	—	मृत	—
शुक्र	शुक्र	—	युवा	—
शनि (व)	चंद्र	—	कुमार	स्वराशि
राहु	केतु	—	—	—
केतु	मंगल	—	—	—

- बाल: लगभग चौथाई फल
- कुमार: लगभग आधा फल
- युवा: पूरा फल
- वृद्ध: कमज़ोर फल
- मृत: बहुत कम फल

ग्रह मैत्री (पंचधा मैत्री)

हर पंक्ति बताती है कि वह ग्रह आपकी कुंडली में दूसरों के प्रति कैसा है: नैसर्गिक मित्रता और स्थिति से बनी तात्कालिक मित्रता मिलाकर। मित्र ग्रह एक-दूसरे की दशा और विषयों में मदद करते हैं।

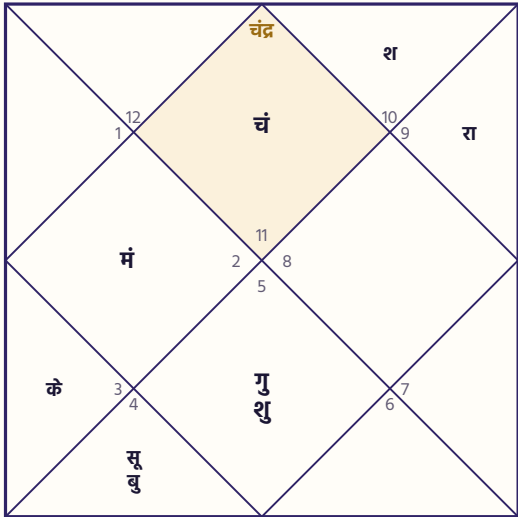
	सू	चं	मं	बु	गु	शु	श
सूर्य	—	स	अमि	श	अमि	स	अश
चंद्र	स	—	मि	स	श	श	मि
मंगल	अमि	अमि	—	स	अमि	मि	श
बुध	स	अश	मि	—	मि	अमि	श
गुरु	अमि	स	अमि	स	—	अश	श
शुक्र	स	अश	मि	अमि	श	—	स
शनि	अश	स	अश	स	श	स	—

अमि अधिमित्र · मि मित्र · स सम · श शत्रु · अश अधिशत्रु

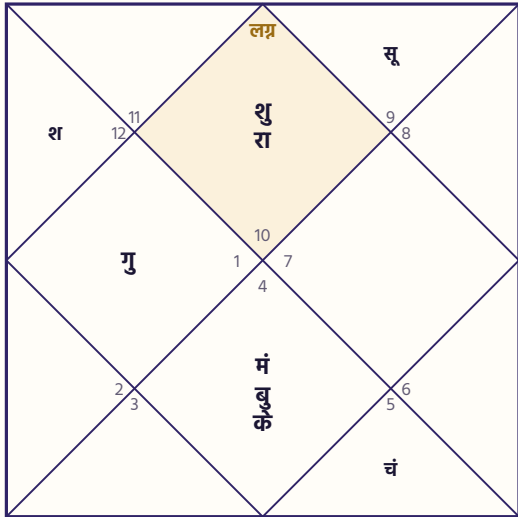
6 वर्ग कुंडलियाँ

वर्ग कुंडलियाँ हर राशि को बारीकी से बाँटकर जीवन के किसी एक क्षेत्र को देखती हैं। नवांश (D9) विवाह और आंतरिक बल के लिए, और दशमांश (D10) करियर के लिए पढ़ा जाता है।

चंद्र कुंडली (चंद्र लग्न)



दशमांश (D10): करियर



मुख्य वर्ग कुंडलियों में हर ग्रह की राशि

	D1	D2	D3	D4	D7	D9	D10	D12
लग्न	कन्या	सिंह	वृष	मिथुन	कन्या	कन्या	मकर	कर्क
सूर्य	कर्क	सिंह	मीन	मेष	कर्क	मीन	धनु	मिथुन
चंद्र	कुंभ	कर्क	मिथुन	सिंह	मिथुन	मीन	सिंह	कन्या
मंगल	वृष	सिंह	कन्या	वृश्चि	मीन	मिथुन	कर्क	धनु
बुध	कर्क	कर्क	वृश्चि	तुला	मीन	तुला	कर्क	वृश्चि
गुरु	सिंह	कर्क	मेष	वृष	मकर	वृश्चि	मेष	वृष
शुक्र	सिंह	कर्क	धनु	कुंभ	वृश्चि	सिंह	मकर	कुंभ
शनि	मकर	सिंह	कन्या	कर्क	वृश्चि	कर्क	मीन	कन्या
राहु	धनु	सिंह	धनु	धनु	धनु	वृष	मकर	मकर
केतु	मिथुन	सिंह	मिथुन	मिथुन	मिथुन	वृश्चि	कर्क	कर्क

D1 राशि (जन्म कुंडली) · D2 होरा (धन) · D3 द्रेष्काण (भाई-बहन, साहस) · D4 चतुर्थांश (संपत्ति, भाग्य) · D7 सप्तमांश (संतान) · D9 नवांश (विवाह, आंतरिक बल) · D10 दशमांश (करियर) · D12 द्वादशांश (माता-पिता)

बारीक वर्ग (D16 से D60)

	D16	D20	D24	D27	D30	D40	D45	D60
लग्न	कुंभ	मकर	मेष	कर्क	वृश्चि	कन्या	मेष	कुंभ
सूर्य	कर्क	वृश्चि	मिथुन	कुंभ	वृश्चि	धनु	वृश्चि	मेष
चंद्र	वृष	धनु	तुला	कुंभ	मिथुन	मेष	वृश्चि	कुंभ
मंगल	मिथुन	धनु	तुला	धनु	मीन	वृश्चि	धनु	कर्क
बुध	तुला	धनु	मेष	धनु	मीन	कुंभ	तुला	कर्क
गुरु	सिंह	मेष	मीन	मकर	मिथुन	धनु	सिंह	सिंह
शुक्र	मेष	तुला	सिंह	मिथुन	धनु	मकर	सिंह	मेष
शनि	मीन	वृष	वृश्चि	मकर	मकर	मकर	वृश्चि	मिथुन
राहु	कुंभ	तुला	वृश्चि	कर्क	मेष	कन्या	मिथुन	सिंह
केतु	कुंभ	तुला	वृश्चि	मकर	मेष	कन्या	मिथुन	कुंभ

D16 षोडशांश (वाहन, सुख-सुविधा) · D20 विंशांश (आध्यात्मिक उन्नति) · D24 चतुर्विंशांश (शिक्षा, विद्या) · D27 भांश (बल और दुर्बलता) · D30 त्रिंशांश (कष्ट, स्वास्थ्य) · D40 खवेदांश (मातृ पक्ष) · D45 अक्षवेदांश (पितृ पक्ष, चरित्र) · D60 षष्ठ्यंश (पूर्व कर्म, समग्र जीवन)

वर्गोत्तम (D1 और D9 में एक ही राशि, इसलिए विशेष भरोसेमंद): शुक्र।

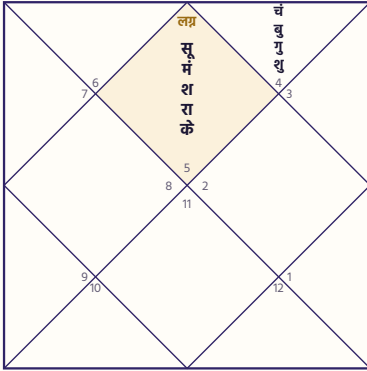
7 षोडशवर्ग: सभी सोलह वर्ग कुंडलियाँ

पराशर ने सोलह वर्ग कुंडलियों, यानी षोडशवर्ग, का वर्णन किया है। हर वर्ग हर राशि को छोटे भागों में बाँटता है, उसका अपना लग्न होता है, और वह जीवन के किसी एक क्षेत्र के लिए पढ़ा जाता है। किसी वर्ग में अपनी या उच्च राशि का ग्रह उस क्षेत्र को सहारा देता है; नीच का ग्रह वहाँ ज़्यादा मेहनत माँगता है। जन्म कुंडली (D1), नवांश (D9) और दशमांश (D10) को इस रिपोर्ट में अलग से विस्तार से पढ़ा गया है।

बारीक वर्ग (D16 से आगे) जन्म समय के कुछ मिनटों से बदल जाते हैं, इसलिए इन पर तभी भरोसा करें जब जन्म समय मिनट तक सही हो।

D2 होरा

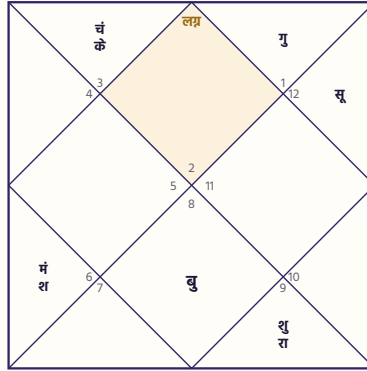
धन



बली: सू चं, गु · निर्बल: -

D3 द्रेष्काण

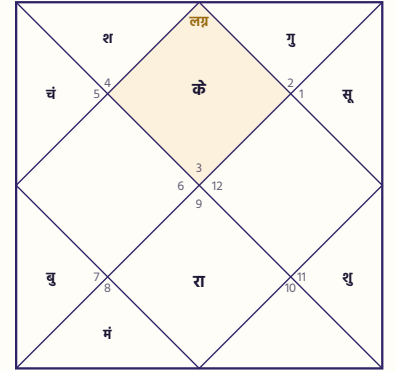
भाई-बहन, साहस



बली: - · निर्बल: -

D4 चतुर्थांश

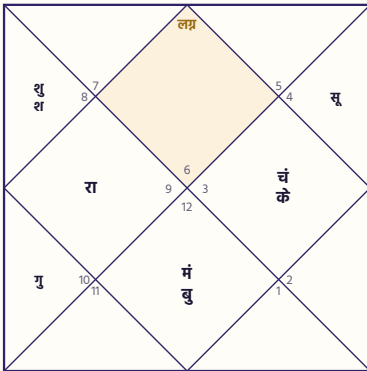
संपत्ति, भाग्य



बली: सू मं · निर्बल: -

D7 सप्तमांश

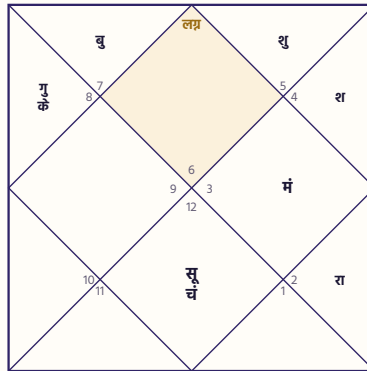
संतान



बली: - · निर्बल: बु, गु

D9 नवांश

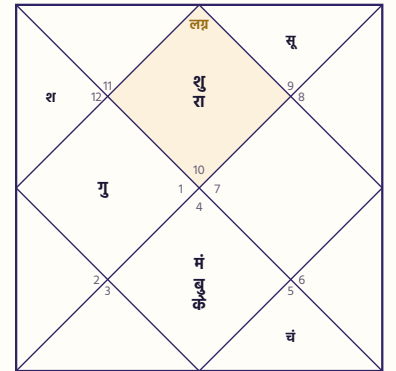
विवाह, आंतरिक बल



बली: - · निर्बल: -

D10 दशमांश

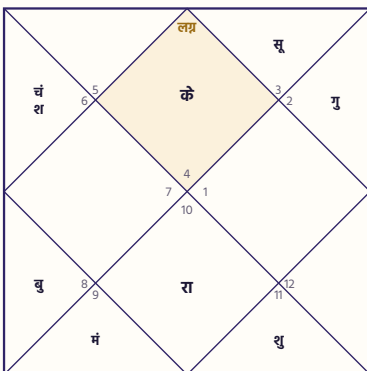
करियर



बली: - · निर्बल: मं

D12 द्वादशांश

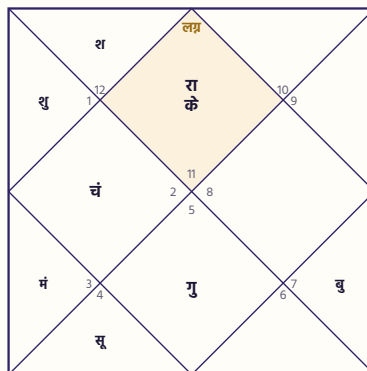
माता-पिता



बली: - · निर्बल: -

D16 षोडशांश

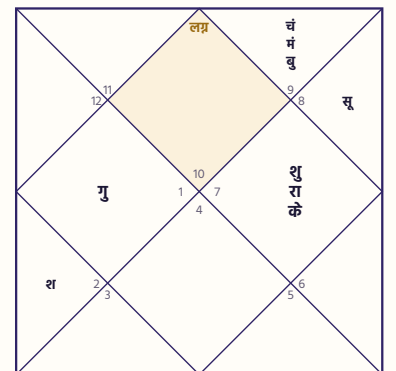
वाहन, सुख-सुविधा



बली: चं · निर्बल: -

D20 विंशांश

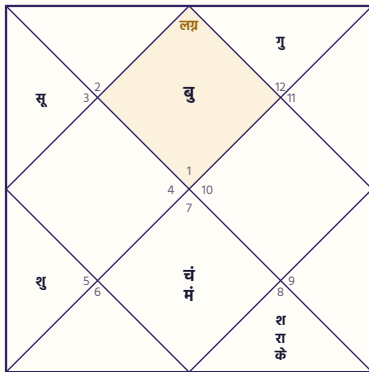
आध्यात्मिक उन्नति



बली: शु · निर्बल: -

D24 चतुर्विंशश

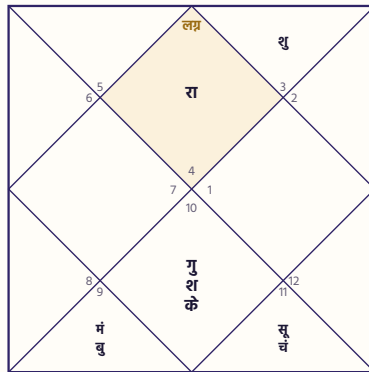
शिक्षा, विद्या



बली: गु · निर्बल: -

D27 भांश

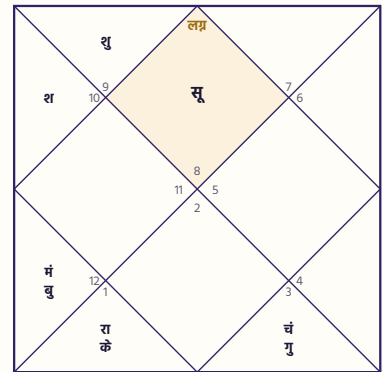
बल और दुर्बलता



बली: श · निर्बल: गु

D30 त्रिंशश

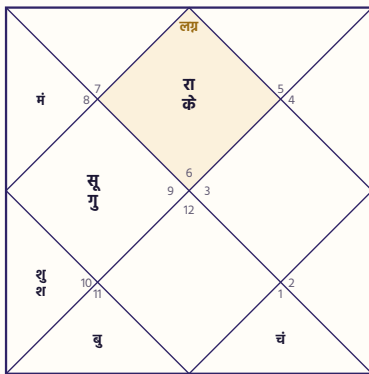
कष्ट, स्वास्थ्य



बली: श · निर्बल: बु

D40 स्ववेदांश

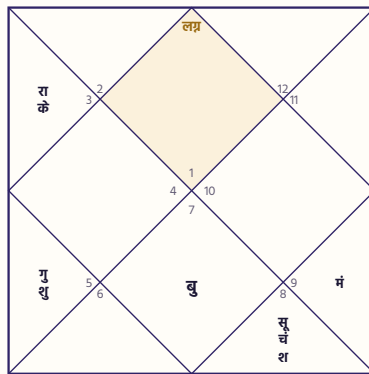
मातृ पक्ष



बली: मं, गु, श · निर्बल: -

D45 अक्षवेदांश

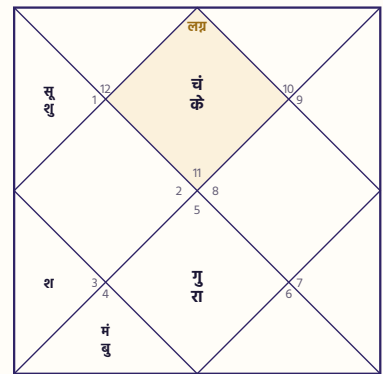
पितृ पक्ष, चरित्र



बली: - · निर्बल: चं

D60 षष्ठ्यांश

पूर्व कर्म, समग्र जीवन



बली: सू · निर्बल: मं

सोलह वर्गों में ग्रहों का बल

सोलह में से कितने वर्गों में हर ग्रह अपनी या उच्च राशि में (बली) है, और कितनों में नीच राशि में। कई वर्गों में बली ग्रह अपनी दशा में स्थिर फल देता है; कई वर्गों में नीच का ग्रह अपनी दशा में उपाय और धैर्य माँगता है।

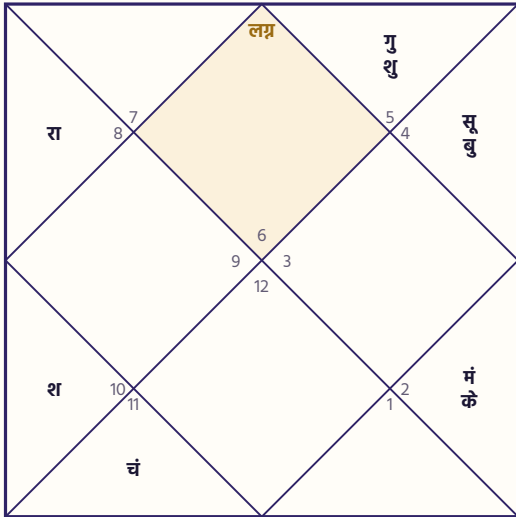
ग्रह	बली	नीच	कुल मिलाकर
सूर्य	16 में 3	16 में 0	सामान्य
चंद्र	16 में 2	16 में 1	सामान्य
मंगल	16 में 2	16 में 2	सहारा चाहिए
बुध	16 में 0	16 में 2	सहारा चाहिए
गुरु	16 में 3	16 में 2	सामान्य
शुक्र	16 में 1	16 में 0	सामान्य
शनि	16 में 4	16 में 0	बली

8

भाव चलित कुंडली

जन्म कुंडली हर राशि को एक पूरा भाव देती है। भाव चलित कुंडली बारह भावों को आपके लग्न के सटीक अंश से नापती है (श्रीपति पद्धति), इसलिए भाव के किनारे के पास बैठा ग्रह पास वाले भाव में जा सकता है। ज्योतिषी ग्रह की राशि और बल जन्म कुंडली से, और वह किस भाव का फल देगा यह चलित कुंडली से पढ़ते हैं।

चलित कुंडली



इसे कैसे पढ़ें

हर भाव अपने मध्य और पिछले भाव के मध्य के ठीक बीच से शुरू होता है। पहले भाव का मध्य आपका सटीक लग्न है और दसवें भाव का मध्य दशम लग्न (मध्याकाश), यानी जन्म के समय सिर के ऊपर का राशि बिंदु।

लग्न

कन्या 26° 45'

दशम लग्न

मिथुन 26° 20'

बारह भाव

भाव	आरंभ	मध्य	ग्रह
1	कन्या 11° 41'	कन्या 26° 45'	
2	तुला 11° 41'	तुला 26° 37'	
3	वृश्चि 11° 32'	वृश्चि 26° 28'	रा
4	धनु 11° 24'	धनु 26° 20'	
5	मकर 11° 24'	मकर 26° 28'	श
6	कुंभ 11° 32'	कुंभ 26° 37'	चं

भाव	आरंभ	मध्य	ग्रह
7	मीन 11° 41'	मीन 26° 45'	
8	मेष 11° 41'	मेघ 26° 37'	
9	वृष 11° 32'	वृष 26° 28'	मं, के
10	मिथुन 11° 24'	मिथुन 26° 20'	
11	कर्क 11° 24'	कर्क 26° 28'	सू, बु
12	सिंह 11° 32'	सिंह 26° 37'	गु, शु

अंश निरयन (लाहिड़ी) हैं।

भाव बदलने वाले ग्रह

राहु जन्म कुंडली के चौथे भाव में हैं, पर चलित कुंडली के तीसरे भाव में। वे अपनी राशि का स्वभाव रखते हैं, पर अपना बहुत सा फल तीसरे भाव के माध्यम से देते हैं: साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ।

केतु जन्म कुंडली के दसवें भाव में हैं, पर चलित कुंडली के नौवें भाव में। वे अपनी राशि का स्वभाव रखते हैं, पर अपना बहुत सा फल नौवें भाव के माध्यम से देते हैं: भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ।

9 आपकी कुंडली के योग और दोष

योग ग्रहों के ऐसे मेल हैं जिनका फल शास्त्रों में बताया गया है। ये आपकी कुंडली में बने योग हैं, उन्हें बनाने वाले ग्रहों के साथ। योग का फल सबसे साफ़ उन ग्रहों की दशा में मिलता है।

गजकेसरी योग

बनाने वाले ग्रह: गुरु, चंद्र

चंद्रमा से केंद्र (पहले, चौथे, सातवें या दसवें) में गुरु। शास्त्र इससे बुद्धि, अच्छी प्रतिष्ठा, स्थायी समृद्धि और विरोधियों पर विजय बताते हैं।

बुधादित्य योग

बनाने वाले ग्रह: सूर्य, बुध

सूर्य और बुध एक साथ। तेज़ बुद्धि, अच्छा संवाद और कौशल के लिए पहचान; बुध सूर्य के बहुत पास न हो तो सबसे मज़बूत।

अनफा योग

बनाने वाले ग्रह: शनि

चंद्रमा से बारहवें भाव में सूर्य के अलावा ग्रह। अच्छी सेहत, सुखद व्यक्तित्व, सुख-सुविधा और शांत, आध्यात्मिक मन।

अधि योग

बनाने वाले ग्रह: बुध, गुरु, शुक्र

चंद्रमा से छठे, सातवें और आठवें भाव में बुध, गुरु और शुक्र। नेतृत्व, सुख और विरोधियों पर विजय।

राजयोग

बनाने वाले ग्रह: बुध, शनि • भाव 1, 5

किसी केंद्र (पहले, चौथे, सातवें, दसवें) का स्वामी किसी त्रिकोण (पहले, पाँचवें, नौवें) के स्वामी के साथ बैठे, उसे देखे या राशि बदले। पद और सफलता में वृद्धि, ख़ासकर इन ग्रहों की दशा में।

राजयोग

बनाने वाले ग्रह: गुरु, शुक्र • भाव 4, 9

किसी केंद्र (पहले, चौथे, सातवें, दसवें) का स्वामी किसी त्रिकोण (पहले, पाँचवें, नौवें) के स्वामी के साथ बैठे, उसे देखे या राशि बदले। पद और सफलता में वृद्धि, ख़ासकर इन ग्रहों की दशा में।

धन योग

बनाने वाले ग्रह: चंद्र, शुक्र • भाव 11, 9

धन के स्वामी (दूसरे या ग्यारहवें) का पहले, पाँचवें या नौवें के स्वामी से संबंध। कमाई की अच्छी क्षमता, जिसका सबसे अच्छा लाभ इन ग्रहों की दशा में मिलता है।

दोष

आपकी कुंडली में कालसर्प, गुरु चांडाल, ग्रहण या केमदुम दोष नहीं है। मांगलिक दोष और शनि अपने अलग अध्याय में हैं।

10

आपके बारह भाव

हर भाव जीवन के एक क्षेत्र का स्वामी है। हर भाव के लिए: उसकी राशि, उसका स्वामी कहाँ बैठा है (और उसका अर्थ), उसमें बैठे ग्रह, उस पर दृष्टि डालने वाले ग्रह और उसके अष्टकवर्ग अंक।

1. स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा

राशि: कन्या • स्वामी: बुध आपके ग्यारहवें भाव में, कर्क

पहला भाव (लग्न) स्वयं आप हैं: आपका शरीर, सेहत, व्यक्तित्व, रूप और जीवन की समग्र दिशा। मज़बूत पहला भाव ऊर्जा और आत्मविश्वास देता है।

लग्नेश आपके ग्यारहवें भाव में: अपनी मेहनत से लाभ मिलता है। मित्रों का बड़ा दायरा, स्थिर आय और समय के साथ पूरी होती महत्वाकांक्षाएँ।

बैठे ग्रह: कोई नहीं • दृष्टि: कोई नहीं • 26 अष्टकवर्ग अंक (औसत)

2. धन, परिवार और वाणी

राशि: तुला • स्वामी: शुक्र आपके बारहवें भाव में, सिंह

दूसरा भाव धन, बचत, परिवार, वाणी, भोजन और बचपन का स्वामी है। यह बताता है कि आप कैसे कमाते और धन बचाते हैं, और कैसे बोलते हैं।

द्वितीयेश आपके बारहवें भाव में: धन यात्रा, परिवार की ज़रूरतों या दान पर जाता है; विदेश से आय संभव है, इसलिए बजट बनाना ज़रूरी है।

शनि की दृष्टि अनुशासन, देरी और ज़िम्मेदारी लाती है: यहाँ फल धीरे आते हैं पर टिकते हैं। केतु की दृष्टि इस क्षेत्र में वैराग्य, अंतर्ज्ञान और अचानक अंतर्दृष्टि लाती है।

बैठे ग्रह: कोई नहीं • दृष्टि: शनि, केतु • 21 अष्टकवर्ग अंक (ध्यान देने लायक)

3. साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ

राशि: वृश्चिक • स्वामी: मंगल आपके नौवें भाव में, वृषभ

तीसरा भाव साहस, प्रयास, भाई-बहन, संवाद, लेखन, छोटी यात्राओं और शौक का स्वामी है। यह आपकी पहल और इच्छाशक्ति दिखाता है।

तृतीयेश आपके नौवें भाव में: आपकी मेहनत भाग्यशाली है: लंबी यात्राएँ, ज्ञान और आस्था से विकास, पिता और गुरुओं के सहयोग से।

मंगल की दृष्टि ऊर्जा, साहस और लगन जोड़ती है, पर इन मामलों में टकराव या जल्दबाज़ी भी।

बैठे ग्रह: कोई नहीं • दृष्टि: मंगल • 31 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

4. घर, माता, संपत्ति और वाहन

राशि: धनु • स्वामी: गुरु आपके बारहवें भाव में, सिंह

चौथा भाव घर, माता, संपत्ति, वाहन, शिक्षा और मन की शांति का स्वामी है। यह आपकी भावनात्मक नींव है।

चतुर्थेश आपके बारहवें भाव में: जन्मस्थान से दूर या विदेश में संपत्ति; घर और वाहन पर खर्च के लिए बजट बनाएँ।

यहाँ राहु इस क्षेत्र में तेज़ इच्छा और अनोखे अनुभव लाते हैं, अचानक उतार-चढ़ाव के साथ।

मंगल की दृष्टि ऊर्जा, साहस और लगन जोड़ती है, पर इन मामलों में टकराव या जल्दबाज़ी भी। गुरु की दृष्टि इस भाव की रक्षा करती है और उसे बढ़ाती है, ज्ञान, विकास और आशीर्वाद के साथ। केतु की दृष्टि इस क्षेत्र में वैराग्य, अंतर्ज्ञान और अचानक अंतर्दृष्टि लाती है।

बैठे ग्रह: राहु • दृष्टि: मंगल, गुरु, केतु • 33 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

5. संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता

राशि: मकर • स्वामी: शनि आपके पाँचवें भाव में, मकर

पाँचवाँ भाव संतान, बुद्धि, रचनात्मकता, प्रेम, पढ़ाई, मंत्र और पूर्व जन्मों के पुण्य (पूर्व पुण्य) का स्वामी है।

पंचमेश आपके पाँचवें भाव में: तेज़ बुद्धि और रचनात्मकता; संतान, पढ़ाई और प्रेम में सौभाग्य, अच्छे निर्णय की क्षमता।

यहाँ शनि इस क्षेत्र में धैर्य और अनुशासन माँगते हैं; फल देर से पर टिकाऊ मिलते हैं।

सूर्य की दृष्टि इस भाव में अधिकार, ऊर्जा और प्रभावशाली लोगों का ध्यान लाती है, साथ में कुछ अहं और गर्मी भी। बुध की दृष्टि इस भाव में बुद्धि, संवाद और व्यापारिक समझ लाती है।

बैठे ग्रह: शनि • दृष्टि: सूर्य, बुध • 23 अष्टकवर्ग अंक (ध्यान देने लायक)

6. नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी

राशि: कुंभ • स्वामी: शनि आपके पाँचवें भाव में, मकर

छठा भाव रोज़ का काम, सेवा, सेहत, कर्ज़, विरोधी और विवादों का स्वामी है। यह बाधाओं को पार करने की आपकी शक्ति दिखाता है।

षष्ठेश आपके पाँचवें भाव में: पढ़ाई और संतान में बाधाएँ आ सकती हैं; सट्टे में सावधानी रखें, पर प्रतिस्पर्धा में आपका दिमाग़ तेज़ चलता है।

यहाँ चंद्रमा इस क्षेत्र को भावनात्मक रूप से केंद्रीय, परिवर्तनशील और मन की शांति के लिए अहम बनाते हैं।

गुरु की दृष्टि इस भाव की रक्षा करती है और उसे बढ़ाती है, ज्ञान, विकास और आशीर्वाद के साथ। शुक्र की दृष्टि इस क्षेत्र में सुख, सामंजस्य, सौंदर्य और आनंद लाती है। केतु की दृष्टि इस क्षेत्र में वैराग्य, अंतर्ज्ञान और अचानक अंतर्दृष्टि लाती है।

बैठे ग्रह: चंद्र • दृष्टि: गुरु, शुक्र, केतु • 27 अष्टकवर्ग अंक (औसत)

7. विवाह, साझेदार और व्यापार

राशि: मीन • स्वामी: गुरु आपके बारहवें भाव में, सिंह

सातवाँ भाव विवाह, जीवनसाथी, साझेदारी, व्यापारिक लेन-देन और सार्वजनिक जीवन का स्वामी है।

सप्तमेश आपके बारहवें भाव में: दूर या विदेश के जीवनसाथी संभव हैं; रिश्ते का एक निजी या आध्यात्मिक पक्ष होता है, और ख़र्च पर ध्यान चाहिए।

शनि की दृष्टि अनुशासन, देरी और ज़िम्मेदारी लाती है: यहाँ फल धीरे आते हैं पर टिकते हैं।

बैठे ग्रह: कोई नहीं • दृष्टि: शनि • 30 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

8. बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले

राशि: मेष • स्वामी: मंगल आपके नौवें भाव में, वृषभ

आठवाँ भाव आयु, अचानक घटनाओं, विरासत, शोध, गूढ़ विद्या और गहरे परिवर्तन का स्वामी है।

अष्टमेश आपके नौवें भाव में: संघर्ष के बाद भाग्य साथ देता है; समय के साथ आपकी आस्था बदलती है; पिता की सेहत का ध्यान रखें।

गुरु की दृष्टि इस भाव की रक्षा करती है और उसे बढ़ाती है, ज्ञान, विकास और आशीर्वाद के साथ। राहु की दृष्टि महत्वाकांक्षा, बेचैनी और अलग तरह के या अचानक बदलाव लाती है।

बैठे ग्रह: कोई नहीं • दृष्टि: गुरु, राहु • 29 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

9. भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ

राशि: वृषभ • स्वामी: शुक्र आपके बारहवें भाव में, सिंह

नौवाँ भाव भाग्य, पिता, गुरु, आस्था, धर्म, उच्च शिक्षा और लंबी यात्राओं का स्वामी है।

नवमेश आपके बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर खर्च।

यहाँ मंगल इस क्षेत्र में ऊर्जा भरते हैं, साहस और पहल लाते हैं, और कभी-कभी टकराव या जल्दबाज़ी भी।

बैठे ग्रह: मंगल • दृष्टि: कोई नहीं • 33 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

10. करियर, पद और सार्वजनिक जीवन

राशि: मिथुन • स्वामी: बुध आपके ग्यारहवें भाव में, कर्क

दसवाँ भाव करियर, पद, अधिकार, प्रतिष्ठा और संसार में आपके कर्म का स्वामी है।

दशमेश आपके ग्यारहवें भाव में: करियर से अच्छी आय और संपर्क; व्यापार, बड़ी संस्थाएँ और टीम का काम अनुकूल।

यहाँ केतु इस क्षेत्र में वैराग्य, आध्यात्मिकता और अप्रत्याशित मोड़ लाते हैं।

राहु की दृष्टि महत्वाकांक्षा, बेचैनी और अलग तरह के या अचानक बदलाव लाती है।

बैठे ग्रह: केतु • दृष्टि: राहु • 34 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

11. लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ

राशि: कर्क • स्वामी: चंद्र आपके छठे भाव में, कुंभ

ग्यारहवाँ भाव लाभ, आय, मित्र, संपर्क, बड़े भाई-बहन और इच्छाओं की पूर्ति का स्वामी है।

एकादशेश आपके छठे भाव में: सेवा, प्रतिस्पर्धा या उधार के काम से लाभ; मित्र विरोधी बन सकते हैं, इसलिए सेहत का ध्यान रखें।

यहाँ सूर्य जीवन के इस क्षेत्र को प्रमुखता और अधिकार देते हैं, सम्मान की चाह के साथ। यहाँ बुध इस क्षेत्र में बुद्धि, संवाद, व्यापार और अनुकूलन क्षमता लाते हैं।

शनि की दृष्टि अनुशासन, देरी और ज़िम्मेदारी लाती है: यहाँ फल धीरे आते हैं पर टिकते हैं।

बैठे ग्रह: सूर्य, बुध • दृष्टि: शनि • 31 अष्टकवर्ग अंक (मज़बूत)

12. खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन

राशि: सिंह • स्वामी: सूर्य आपके ग्यारहवें भाव में, कर्क

बारहवाँ भाव खर्च, हानि, विदेश, नींद, एकांत, दान और मोक्ष का स्वामी है।

द्वादशेश आपके ग्यारहवें भाव में: विदेशी स्रोतों से लाभ और मित्रों पर खर्च; आय और खर्च में संतुलन।

यहाँ गुरु इस क्षेत्र को विकास, ज्ञान और रक्षा का आशीर्वाद देते हैं। यहाँ शुक्र इस क्षेत्र में सुख, सौंदर्य, स्नेह और आनंद लाते हैं।

चंद्रमा की दृष्टि संवेदनशीलता, लोकप्रियता और उतार-चढ़ाव लाती है, जिससे यह क्षेत्र भावनात्मक रूप से अहम हो जाता है। मंगल की दृष्टि ऊर्जा, साहस और लगन जोड़ती है, पर इन मामलों में टकराव या जल्दबाज़ी भी। राहु की दृष्टि महत्वाकांक्षा, बेचैनी और अलग तरह के या अचानक बदलाव लाती है।

बैठे ग्रह: गुरु, शुक्र • दृष्टि: चंद्र, मंगल, राहु • 19 अष्टकवर्ग अंक (ध्यान देने लायक)

11

विवाह और जीवनसाथी

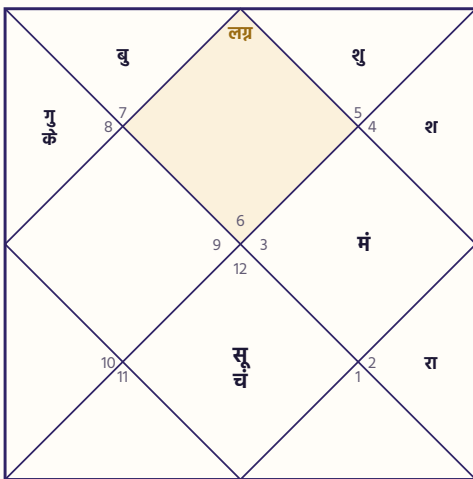
आपका सातवाँ भाव (विवाह) मीन राशि का है, जिसके स्वामी गुरु हैं। सातवें भाव में मीन राशि कोमल, कल्पनाशील और करुणामय जीवनसाथी की ओर इशारा करती है, जो अक्सर आध्यात्मिक या कलात्मक होते हैं। दया और समझ विवाह का केंद्र हैं।

सप्तमेश आपके बारहवें भाव में: दूर या विदेश के जीवनसाथी संभव हैं; रिश्ते का एक निजी या आध्यात्मिक पक्ष होता है, और ख़र्च पर ध्यान चाहिए। आपके सातवें भाव में कोई ग्रह नहीं है; इसके स्वामी और शुक्र फल बताते हैं। प्रेम के नैसर्गिक कारक शुक्र आपके बारहवें भाव में हैं।

आपका जीवनसाथी

दाराकारक बुध होने से जीवनसाथी आमतौर पर युवा स्वभाव वाले, चतुर और बातचीत में कुशल होते हैं, अक्सर व्यापार या पढ़ाई से जुड़े।

नवांश कुंडली (D9)



नवांश विवाह और भीतरी बल की कुंडली है। इसका लग्न कन्या है, और सातवाँ भाव मीन। सातवें भाव में मीन राशि कोमल, कल्पनाशील और करुणामय जीवनसाथी की ओर इशारा करती है, जो अक्सर आध्यात्मिक या कलात्मक होते हैं। दया और समझ विवाह का केंद्र हैं।

वर्गोत्तम ग्रह (दोनों कुंडलियों में एक ही राशि, इसलिए विशेष रूप से भरोसेमंद): शुक्र।

विवाह के लिए अनुकूल समय

शनि - राहु

- शनि की दृष्टि आपके सातवें भाव पर है
- अक्टू 2026 से जूल 2027 तक गुरु का गोचर आपके सातवें भाव को बल देता है

અવધૂં 2026 – જુલૂં 2027

शनि - गुरु

- गुरु आपके सातवें भाव (विवाह, साझेदार और व्यापार) के स्वामी हैं
- गुरु विवाह और संबंधों के नैसर्गिक कारक हैं
- शनि की दृष्टि आपके सातवें भाव पर है
- दिस० 2027 से अग० 2029 तक गुरु का गोचर आपके सातवें भाव को बल देता है

जुल० 2027 – जन० 2030

बुध - शुक्र

- शुक्र आपके दूसरे भाव (धन, परिवार और वाणी) के स्वामी हैं
- शुक्र विवाह और संबंधों के नैसर्गिक कारक हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- अप्रैल 2034 से मई 2035 तक गुरु का गोचर आपके सातवें भाव को बल देता है

जून 2033 – अप्रैल 2036

ये वे अंतर्दशाएँ हैं जिनके स्वामी आपकी कुंडली में इस क्षेत्र से सबसे ज़्यादा जुड़े हैं, और जब गुरु का गोचर उसी भाव को बल दे तो वे और प्रबल होती हैं। ये अनुकूल परिस्थितियों का समय बताती हैं, निश्चितता नहीं।

12

करियर: नौकरी या व्यापार

आपका दसवाँ भाव (करियर) मिथुन राशि का है, जिसके स्वामी बुध हैं। दशमेश आपके ग्यारहवें भाव में: करियर से अच्छी आय और संपर्क; व्यापार, बड़ी संस्थाएँ और टीम का काम अनुकूल।

आपके दसवें भाव में ग्रह: केतु।

दोनों के योग

आपकी कुंडली दोनों का साथ देती है। व्यावहारिक रास्ता है कि पहले नौकरी में कौशल, संपर्क और बचत बनाएँ, फिर नीचे दिए किसी अनुकूल समय में व्यापार, या साथ में छोटा व्यापार, शुरू करें।

- दशमेश आपके ग्यारहवें भाव में हैं (व्यापार के पक्ष में)
- षष्ठेश (नौकरी) बलवान हैं (नौकरी के पक्ष में)

मिले संकेत: नौकरी 1, व्यापार 1।

मिथुन दशम भाव के अनुकूल क्षेत्र

लेखन, पत्रकारिता और मीडिया

मार्केटिंग, बिक्री और विज्ञापन

शिक्षण और प्रशिक्षण

आईटी और डिजिटल काम

व्यापार और वाणिज्य

व्यापार शुरू करने या बढ़ाने का सबसे अच्छा समय

बुध की दशा

जन० 2030 – जून 2032

- बुध आपके दसवें भाव (करियर, पद और सार्वजनिक जीवन) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- बुध व्यापार के नैसर्गिक कारक हैं
- जन० 2030 से मार्च 2032 तक गुरु का गोचर आपके दसवें भाव को बल देता है

बुध – केतु

जून 2032 – जून 2033

- केतु आपके दसवें भाव में बैठे हैं
- बुध आपके दसवें भाव (करियर, पद और सार्वजनिक जीवन) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- अग० 2032 से जून 2033 तक गुरु का गोचर आपके दसवें भाव को बल देता है

बुध – राहु

जुल० 2039 – फ़र० 2042

- राहु की दृष्टि आपके दसवें भाव पर है
- राहु व्यापार के नैसर्गिक कारक हैं
- बुध आपके दसवें भाव (करियर, पद और सार्वजनिक जीवन) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं

नई नौकरी, पदोन्नति या करियर बदलने का सबसे अच्छा समय

बुध – सूर्य

अप्रैल 2036 – फ़र० 2037

- सूर्य आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- सूर्य करियर के नैसर्गिक कारक हैं
- बुध आपके दसवें भाव (करियर, पद और सार्वजनिक जीवन) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं

बुध - चंद्र**फ़र० 2037 - जुल० 2038**

- चंद्र आपके ग्यारहवें भाव (लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ) के स्वामी हैं
- चंद्र आपके छठे भाव में बैठे हैं
- बुध आपके दसवें भाव (करियर, पद और सार्वजनिक जीवन) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं

13

संपत्ति, घर और वाहन

आपका चौथा भाव (घर, ज़मीन और वाहन) धनु राशि का है, जिसके स्वामी गुरु हैं। चतुर्थेश आपके बारहवें भाव में: जन्मस्थान से दूर या विदेश में संपत्ति; घर और वाहन पर खर्च के लिए बजट बनाएँ।

आपके चौथे भाव में ग्रह: राहु। मंगल (ज़मीन और भवन) आपके नौवें भाव में हैं, और शुक्र (वाहन और सुख-सुविधा) आपके बारहवें भाव में।

घर, ज़मीन या वाहन खरीदने का अनुकूल समय

शनि – राहु

अक्टू० 2026 – जुल० 2027

- राहु आपके चौथे भाव में बैठे हैं
- नव० 2026 से फ़र० 2027 तक गुरु का गोचर आपके चौथे भाव को बल देता है

बुध – राहु

जुल० 2039 – फ़र० 2042

- राहु आपके चौथे भाव में बैठे हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- जुल० 2039 से जुल० 2040 तक गुरु का गोचर आपके चौथे भाव को बल देता है

बुध – गुरु

फ़र० 2042 – मई 2044

- गुरु आपके चौथे भाव (घर, माता, संपत्ति और वाहन) के स्वामी हैं
- गुरु की दृष्टि आपके चौथे भाव पर है
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- जन० 2043 से फ़र० 2044 तक गुरु का गोचर आपके चौथे भाव को बल देता है

14

जीवन के क्षेत्र विस्तार से

नीचे जीवन का हर क्षेत्र उसके अपने भावों, उनके स्वामियों और उसके नैसर्गिक कारक ग्रहों से पढ़ा गया है, और फिर आपकी दशा और गुरु के गोचर से समय निकाला गया है।

शिक्षा और ज्ञान

शिक्षा चौथे भाव (स्कूली शिक्षा और सीखने की नींव), पाँचवें (बुद्धि, समझ और उच्च अध्ययन) और नौवें (विश्वविद्यालय, उच्च और आध्यात्मिक ज्ञान) से देखी जाती है, और बुध (बुद्धि) व गुरु (ज्ञान) इसके कारक हैं।

आपके चौथे भाव में धनु राशि है, जिसके स्वामी गुरु हैं। चतुर्थेश आपके बारहवें भाव में: जन्मस्थान से दूर या विदेश में संपत्ति; घर और वाहन पर खर्च के लिए बजट बनाएँ।

आपके पाँचवें भाव में मकर राशि है, जिसके स्वामी शनि हैं। पंचमेश आपके पाँचवें भाव में: तेज़ बुद्धि और रचनात्मकता; संतान, पढ़ाई और प्रेम में सौभाग्य, अच्छे निर्णय की क्षमता।

आपके नौवें भाव में वृषभ राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। नवमेश आपके बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर खर्च।

यहाँ के नैसर्गिक कारक बुध आपके ग्यारहवें भाव में कर्क राशि में हैं। यहाँ के नैसर्गिक कारक गुरु आपके बारहवें भाव में सिंह राशि में हैं। आपके चौथे भाव में: यहाँ राहु इस क्षेत्र में तेज़ इच्छा और अनोखे अनुभव लाते हैं, अचानक उतार-चढ़ाव के साथ। आपके पाँचवें भाव में: यहाँ शनि इस क्षेत्र में धैर्य और अनुशासन माँगते हैं; फल देर से पर टिकाऊ मिलते हैं।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली शिक्षा और ज्ञान को स्थिर, मिला-जुला सहयोग देती है: कुछ बातें मदद करती हैं और कुछ धैर्य माँगती हैं, इसलिए फल लगातार मेहनत से मिलता है।

सूर्योदय के बाद के घंटों में पढ़ें, नियमित दिनचर्या रखें और गुरुजनों का सम्मान करें: गुरु विनम्रता का फल देते हैं। पढ़ाई से पहले सरस्वती या गायत्री मंत्र स्मरण शक्ति और एकाग्रता का पारंपरिक सहारा है।

पढ़ाई, परीक्षा और नए कौशल के लिए अनुकूल समय

शनि – राहु

अक्टू० 2026 – जुल० 2027

- राहु आपके चौथे भाव में बैठे हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं
- अक्टू० 2026 से जुल० 2027 तक गुरु का गोचर आपके पाँचवें भाव को बल देता है

शनि – गुरु

जुल० 2027 – जन० 2030

- गुरु आपके चौथे भाव (घर, माता, संपत्ति और वाहन) के स्वामी हैं
- गुरु की दृष्टि आपके चौथे भाव पर है
- गुरु शिक्षा और ज्ञान के नैसर्गिक कारक हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं

बुध – राहु

जुल० 2039 – फ़र० 2042

- राहु आपके चौथे भाव में बैठे हैं
- बुध की दृष्टि आपके पाँचवें भाव पर है
- जुल० 2039 से अग० 2041 तक गुरु का गोचर आपके पाँचवें भाव को बल देता है

धन और आर्थिक स्थिति

धन दूसरे भाव (बचत, पारिवारिक धन और अपनी मेहनत की कमाई) और ग्यारहवें (लाभ, मुनाफ़ा और कई स्रोतों से आय) से देखा जाता है, पाँचवें और नौवें (भाग्य और निवेश) के सहयोग के साथ, और गुरु व शुक्र सप्तमि के कारक हैं।

आपके दूसरे भाव में तुला राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। द्वितीये आपकी बारहवें भाव में: धन यात्रा, परिवार की ज़रूरतों या दान पर जाता है; विदेश से आय संभव है, इसलिए बजट बनाना ज़रूरी है।

आपके ग्यारहवें भाव में कर्क राशि है, जिसके स्वामी चंद्र हैं। एकादश आपकी छठे भाव में: सेवा, प्रतिस्पर्धा या उधार के काम से लाभ; मित्र विरोधी बन सकते हैं, इसलिए सेहत का ध्यान रखें।

आपके पाँचवें भाव में मकर राशि है, जिसके स्वामी शनि हैं। पंचमेश आपकी पाँचवें भाव में: तेज़ बुद्धि और रचनात्मकता; संतान, पढ़ाई और प्रेम में सौभाग्य, अच्छे निर्णय की क्षमता।

आपके नौवें भाव में वृषभ राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। नवमेश आपकी बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर खर्च।

यहाँ के नैसर्गिक कारक गुरु आपकी बारहवें भाव में सिंह राशि में हैं। यहाँ के नैसर्गिक कारक शुक्र आपकी बारहवें भाव में सिंह राशि में हैं। आपके ग्यारहवें भाव में: यहाँ सूर्य जीवन के इस क्षेत्र को प्रमुखता और अधिकार देते हैं, सम्मान की चाह के साथ। आपके ग्यारहवें भाव में: यहाँ बुध इस क्षेत्र में बुद्धि, संवाद, व्यापार और अनुकूलन क्षमता लाते हैं।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली में धन और आर्थिक स्थिति के लिए ज़्यादा मेहनत चाहिए: मुख्य भावों में कुछ चुनौतियाँ हैं, इसलिए सोच-समझकर योजना बनाएँ, धैर्य रखें और नीचे दिए अनुकूल समय का उपयोग करें।

हर आय का एक तय हिस्सा खर्च से पहले बचाएँ, कठिन समय में बड़ी रकम उधार न दें, और सट्टे की जगह लगातार निवेश करें। शुक्रवार को लक्ष्मी पूजा और कमाई के अनुपात में दान स्थायी धन का पारंपरिक सहारा है।

आय, बचत और निवेश के लिए अनुकूल समय

बुध – शुक्र

जून 2033 – अप्रैल 2036

- शुक्र आपके दूसरे भाव (धन, परिवार और वाणी) के स्वामी हैं
- शुक्र आपके नौवें भाव (भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ) के स्वामी हैं
- शुक्र धन के नैसर्गिक कारक हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं

बुध – चंद्र

फ़रवरी 2037 – जुलाई 2038

- चंद्र आपके ग्यारहवें भाव (लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ) के स्वामी हैं
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- मई 2037 से जुलाई 2038 तक गुरु का गोचर आपके ग्यारहवें भाव को बल देता है

बुध – शनि

मई 2044 – जनवरी 2047

- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं
- शनि की दृष्टि आपके ग्यारहवें भाव पर है
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं

संतान

संतान पाँचवें भाव, उसके स्वामी और संतान के कारक गुरु से देखी जाती है, नौवें (आशीर्वाद) और ग्यारहवें (इच्छा पूर्ति) के सहयोग के साथ।

आपके पाँचवें भाव में मकर राशि है, जिसके स्वामी शनि हैं। पंचमेश आपके पाँचवें भाव में: तेज़ बुद्धि और रचनात्मकता; संतान, पढ़ाई और प्रेम में सौभाग्य, अच्छे निर्णय की क्षमता।

आपके नौवें भाव में वृषभ राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। नवमेश आपके बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर खर्च।

यहाँ के नैसर्गिक कारक गुरु आपके बारहवें भाव में सिंह राशि में हैं। आपके पाँचवें भाव में: यहाँ शनि इस क्षेत्र में धैर्य और अनुशासन माँगते हैं; फल देर से पर टिकाऊ मिलते हैं।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली संतान को स्थिर, मिला-जुला सहयोग देती है: कुछ बातें मदद करती हैं और कुछ धैर्य माँगती हैं, इसलिए फल लगातार मेहनत से मिलता है।

पाँचवाँ भाव पुण्य (पूर्व पुण्य) का भी भाव है: बच्चों के प्रति दया, पढ़ाना और दान इसे मज़बूत करते हैं। पारंपरिक सहारे में संतान गोपाल मंत्र और गुरुवार को गुरु की पूजा शामिल है।

संतान और परिवार बढ़ने के लिए अनुकूल समय

शनि – राहु

अक्टू० 2026 – जुल० 2027

- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं
- अक्टू० 2026 से जुल० 2027 तक गुरु का गोचर आपके पाँचवें भाव को बल देता है

शनि – गुरु

जुल० 2027 – जन० 2030

- गुरु संतान के नैसर्गिक कारक हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं
- दिस० 2027 से अग० 2029 तक गुरु का गोचर आपके पाँचवें भाव को बल देता है

बुध – सूर्य

अप्रैल 2036 – फ़र० 2037

- सूर्य आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- सूर्य की दृष्टि आपके पाँचवें भाव पर है
- बुध आपके ग्यारहवें भाव में बैठे हैं
- बुध की दृष्टि आपके पाँचवें भाव पर है

विदेश यात्रा और निवास

विदेश बारहवें भाव (जन्मस्थान से दूर रहना और विदेश में बसना) और नौवें (लंबी यात्राएँ) से देखा जाता है, सातवाँ और तीसरा काम और साझेदारी के लिए यात्रा दिखाते हैं, और राहु विदेश और अनजानी चीज़ों के कारक हैं।

आपके बारहवें भाव में सिंह राशि है, जिसके स्वामी सूर्य हैं। द्वादशेश आपके ग्यारहवें भाव में: विदेशी स्रोतों से लाभ और मित्रों पर खर्च; आय और खर्च में संतुलन।

आपके नौवें भाव में वृषभ राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। नवमेश आपके बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर खर्च।

आपके सातवें भाव में मीन राशि है, जिसके स्वामी गुरु हैं। सप्तमेश आपके बारहवें भाव में: दूर या विदेश के जीवनसाथी संभव हैं; रिश्ते का एक निजी या आध्यात्मिक पक्ष होता है, और स्वर्च पर ध्यान चाहिए।

यहाँ के नैसर्गिक कारक राहु आपके चौथे भाव में धनु राशि में हैं। आपके बारहवें भाव में: यहाँ गुरु इस क्षेत्र को विकास, ज्ञान और रक्षा का आशीर्वाद देते हैं। आपके बारहवें भाव में: यहाँ शुक्र इस क्षेत्र में सुख, सौंदर्य, स्नेह और आनंद लाते हैं। आपके नौवें भाव में: यहाँ मंगल इस क्षेत्र में ऊर्जा भरते हैं, साहस और पहल लाते हैं, और कभी-कभी टकराव या जल्दबाज़ी भी।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली विदेश यात्रा और निवास को स्थिर, मिला-जुला सहयोग देती है: कुछ बातें मदद करती हैं और कुछ घेर्य माँगती हैं, इसलिए फल लगातार मेहनत से मिलता है।

विदेश जाने की योजना नीचे दिए अनुकूल समय में बनाएँ, कागज़ात ठीक रखें, और कहीं भी रहें अपनी जड़ों और पारिवारिक परंपराओं से जुड़े रहें: बारहवाँ भाव स्थिर आंतरिक जीवन का फल देता है।

यात्रा और विदेश जाने के लिए अनुकूल समय

बुध – शुक्र

जून 2033 – अप्रैल 2036

- शुक्र आपके नौवें भाव (भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ) के स्वामी हैं
- शुक्र आपके बारहवें भाव में बैठे हैं
- जून 2033 से अप्रैल 2036 तक गुरु का गोचर आपके बारहवें भाव को बल देता है

बुध – राहु

जुल० 2039 – फ़र० 2042

- राहु की दृष्टि आपके बारहवें भाव पर है
- राहु विदेश यात्रा और निवास के नैसर्गिक कारक हैं
- जुल० 2039 से फ़र० 2042 तक गुरु का गोचर आपके नौवें भाव को बल देता है

बुध – गुरु

फ़र० 2042 – मई 2044

- गुरु आपके सातवें भाव (विवाह, साझेदार और व्यापार) के स्वामी हैं
- गुरु आपके बारहवें भाव में बैठे हैं
- फ़र० 2042 से मई 2044 तक गुरु का गोचर आपके नौवें भाव को बल देता है

आध्यात्मिक जीवन

आध्यात्मिक जीवन नौवें भाव (आस्था, धर्म और गुरु), बारहवें (ध्यान, एकांत और मोक्ष) और पाँचवें (मंत्र और भक्ति) से देखा जाता है, और गुरु व केतु इसके कारक हैं।

आपके नौवें भाव में वृषभ राशि है, जिसके स्वामी शुक्र हैं। नवमेश आपके बारहवें भाव में: विदेश में या आध्यात्म और दान से भाग्य; धार्मिक कार्यों और तीर्थयात्रा पर स्वर्च।

आपके बारहवें भाव में सिंह राशि है, जिसके स्वामी सूर्य हैं। द्वादशेश आपके ग्यारहवें भाव में: विदेशी स्रोतों से लाभ और मित्रों पर स्वर्च; आय और स्वर्च में संतुलन।

आपके पाँचवें भाव में मकर राशि है, जिसके स्वामी शनि हैं। पंचमेश आपके पाँचवें भाव में: तेज़ बुद्धि और रचनात्मकता; संतान, पढ़ाई और प्रेम में सौभाग्य, अच्छे निर्णय की क्षमता।

यहाँ के नैसर्गिक कारक गुरु आपके बारहवें भाव में सिंह राशि में हैं। यहाँ के नैसर्गिक कारक केतु आपके दसवें भाव में मिथुन राशि में हैं। आपके नौवें भाव में: यहाँ मंगल इस क्षेत्र में ऊर्जा भरते हैं, साहस और पहल लाते हैं, और कभी-कभी टकराव या जल्दबाज़ी भी। आपके बारहवें भाव में: यहाँ गुरु इस क्षेत्र को विकास, ज्ञान और रक्षा का आशीर्वाद देते हैं। आपके बारहवें भाव में: यहाँ शुक्र इस क्षेत्र में सुख, सौंदर्य, स्नेह और आनंद लाते हैं।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली आध्यात्मिक जीवन को स्थिर, मिला-जुला सहयोग देती है: कुछ बातें मदद करती हैं और कुछ घेर्य माँगती हैं, इसलिए फल लगातार मेहनत से मिलता है।

कभी-कभार लंबी साधना से रोज़ की छोटी साधना ज़्यादा फल देती है: हर दिन एक ही समय कुछ मिनट मंत्र, प्रार्थना या ध्यान। नीचे दिए समय में तीर्थ और सेवा का विशेष सहयोग है।

साधना और तीर्थ के लिए अनुकूल समय

शनि – गुरु

जुल० 2027 – जन० 2030

- गुरु आपके बारहवें भाव में बैठे हैं
- गुरु आध्यात्मिक जीवन के नैसर्गिक कारक हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव (संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता) के स्वामी हैं
- शनि आपके पाँचवें भाव में बैठे हैं

केतु – शुक्र

जून 2047 – अग० 2048

- शुक्र आपके नौवें भाव (भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ) के स्वामी हैं
- शुक्र आपके बारहवें भाव में बैठे हैं
- जून 2047 से अग० 2048 तक गुरु का गोचर आपके नौवें भाव को बल देता है

केतु – गुरु

जन० 2051 – दिस० 2051

- गुरु आपके बारहवें भाव में बैठे हैं
- गुरु आध्यात्मिक जीवन के नैसर्गिक कारक हैं
- जन० 2051 से दिस० 2051 तक गुरु का गोचर आपके नौवें भाव को बल देता है

सेहत और कल्याण

सेहत पहले भाव और उसके स्वामी (आपका शरीर और ऊर्जा), छठे (रोग, ठीक होना और रोज़ की आदतें) और आठवें (पुराने या अचानक कष्ट) से देखी जाती है, और सूर्य (ऊर्जा) व चंद्रमा (मन) इसके कारक हैं।

आपके पहले भाव में कन्या राशि है, जिसके स्वामी बुध हैं। लग्नेश आपके ग्यारहवें भाव में: अपनी मेहनत से लाभ मिलता है। मित्रों का बड़ा दायरा, स्थिर आय और समय के साथ पूरी होती महत्वाकांक्षाएँ।

आपके छठे भाव में कुंभ राशि है, जिसके स्वामी शनि हैं। षष्ठेश आपके पाँचवें भाव में: पढ़ाई और संतान में बाधाएँ आ सकती हैं; सट्टे में सावधानी रखें, पर प्रतिस्पर्धा में आपका दिमाग तेज़ चलता है।

आपके आठवें भाव में मेष राशि है, जिसके स्वामी मंगल हैं। अष्टमेश आपके नौवें भाव में: संघर्ष के बाद भाग्य साथ देता है; समय के साथ आपकी आस्था बदलती है; पिता की सेहत का ध्यान रखें।

यहाँ के नैसर्गिक कारक सूर्य आपके ग्यारहवें भाव में कर्क राशि में हैं। यहाँ के नैसर्गिक कारक चंद्र आपके छठे भाव में कुंभ राशि में हैं।

कुल मिलाकर आपकी कुंडली सेहत और कल्याण को स्थिर, मिला-जुला सहयोग देती है: कुछ बातें मदद करती हैं और कुछ घेर्य माँगती हैं, इसलिए फल लगातार मेहनत से मिलता है।

नियमित नींद, सादा भोजन और रोज़ की गतिविधि उन ग्रहों की रक्षा करते हैं जो आपकी सेहत चलाते हैं। नीचे दिए समय में चिंता नहीं, सावधानी रखें: समय पर जाँच करवाएँ और अनावश्यक जोखिम से बचें।

सेहत पर ध्यान देने का समय

अगले पंद्रह सालों में कोई समय सेहत के लिए ख़ास कठिन नहीं दिखता; सामान्य देखभाल काफी है।

15

अभी चल रही दशा

शनि की महादशा

जन० 2011 – जन० 2030

शनि की महादशा (19 वर्ष) धैर्य, अनुशासन और कड़ी मेहनत का फल देती है। प्रगति धीमी पर टिकाऊ होती है, और ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती हैं। देरी और थकान परीक्षाएँ हैं; निरंतर प्रयास आगे के जीवन की मज़बूत नींव बनाता है।

आपकी कुंडली में शनि आपके पाँचवें भाव और छठे भाव के स्वामी हैं और आपके पाँचवें भाव में मकर राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी।

इस महादशा की अंतर्दशाएँ

शनि	19 जन० 2011 – 22 जन० 2014	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी
बुध	22 जन० 2014 – 1 अक्टू० 2016	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ
केतु	1 अक्टू० 2016 – 10 नव० 2017	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन
शुक्र	10 नव० 2017 – 9 जन० 2021	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन
सूर्य	9 जन० 2021 – 22 दिस० 2021	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ
चंद्र	22 दिस० 2021 – 24 जुल० 2023	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी
मंगल	24 जुल० 2023 – 1 सित० 2024	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ
राहु . अभी	1 सित० 2024 – 8 जुल० 2027	घर, माता, संपत्ति और वाहन
गुरु	8 जुल० 2027 – 19 जन० 2030	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन

अंतर्दशाएँ विस्तार से

शनि – राहु . 1 सित० 2024 – 8 जुल० 2027

यह अंतर्दशा इन विषयों को केंद्र में लाती है: घर, माता, संपत्ति और वाहन। दोनों ग्रह एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए फल आपकी मेहनत के अनुसार मिलते हैं।

शनि - गुरु - 8 जुल० 2027 - 19 जन० 2030

यह अंतर्दशा इन विषयों को केंद्र में लाती है: घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन। दोनों ग्रह एक-दूसरे के प्रति सम हैं, इसलिए फल आपकी मेहनत के अनुसार मिलते हैं।

16

आपके अगले 12 महीने

आने वाले साल का महीने-दर-महीने हाल। हर महीने में आपकी अपनी चल रही दशाएँ (महादशा, अंतर्दशा और प्रत्यंतर दशा) और उस महीने के ग्रह गोचर, पारंपरिक गोचर की तरह चंद्र राशि से पढ़े गए हैं। शुभ दिन वे हैं जब चंद्रमा आपके चंद्रमा से तीसरे, छठे, दसवें या ग्यारहवें भाव से गुजरे; चंद्राष्टम के दिन, जब वह आठवें से गुजरे, संभलकर चलने के हैं।

अक्टूबर 2026

सावधानी

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर दशा (21 दिस० 2026 तक)।

सूर्य चंद्रमा से आपके आठवें भाव में (1 अक्टू० - 17 अक्टू०): आठवें भाव में सूर्य सेहत, धन और अधिकारियों के मामले में सावधानी माँगते हैं। सादगी से रहें और बेवजह जोखिम न लें। 17 अक्टू० को ये आपके नौवें भाव में आते हैं: नौवें भाव में सूर्य बड़ों या बॉस से अनबन और भाग्य में देरी ला सकते हैं। विनम्र रहें और अपने वादे निभाएँ।

बुध चंद्रमा से आपके नौवें भाव में (1 अक्टू० - 31 अक्टू०): नौवें भाव में बुध योजनाओं में देरी और संदेह ला सकते हैं। पढ़ें, सीखें और फ़ैसले से पहले स्पष्टता का इंतज़ार करें।

शुक्र चंद्रमा से आपके नौवें भाव में (1 अक्टू० - 31 अक्टू०): नौवें भाव में शुक्र सौभाग्य, सुखद यात्रा और आशीर्वाद लाते हैं। उत्सवों के लिए खुशी का समय।

मंगल चंद्रमा से आपके छठे भाव में (1 अक्टू० - 31 अक्टू०): छठे भाव में मंगल बहुत शुभ हैं: आप विरोधियों पर भारी पड़ते हैं, कर्ज़ उतरता है और सेहत सुधरती है। कठिन समस्याएँ अभी सुलझाएँ।

इस महीने धीमे ग्रह

गुरु 31 अक्टू० को राशि बदलते हैं। गुरु चंद्रमा से आपके सातवें भाव में (31 अक्टू० - 31 अक्टू०): सातवें भाव में गुरु साझेदारी, विवाह और अनुबंधों के पक्ष में हैं। रिश्ते गहरे होते हैं, अच्छे सलाहकार मिलते हैं और व्यापारिक सौदे अच्छे चलते हैं। सगाई, विवाह और नए सहयोग के लिए पारंपरिक रूप से अच्छा समय।

शनि चंद्रमा से आपके दूसरे भाव में बने रहते हैं। दूसरे भाव में शनि, साढ़ेसाती का अंतिम चरण, धन को तंग कर सकते हैं और परिवार या वाणी की परीक्षा ले सकते हैं। बचत करें, कठोर शब्दों से बचें और पुरानी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें; यह चरण ख़त्म होते-होते दबाव कम हो रहा है।

राहु चंद्रमा से आपके पहले भाव में बने रहते हैं। चंद्र राशि पर राहु महत्वाकांक्षा और बेचैनी जगाते हैं, जबकि सातवें भाव में केतु साझेदारी को प्रभावित करते हैं। असामान्य अवसर आते हैं, पर भ्रम और जल्दबाज़ी के फ़ैसलों का जोखिम है। तथ्य जाँचें और रिश्तों में ईमानदारी रखें।

शुभ दिन: 5, 6, 14, 15, 16, 17, 18, 26, 27। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 9 अक्टू० - 11 अक्टू०।

नवंबर 2026

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर दशा (21 दिस० 2026 तक)।

सूर्य 16 नव० तक चंद्रमा से आपके नौवें भाव में हैं। 16 नव० को ये आपके दसवें भाव में आते हैं: दसवें भाव में सूर्य काम में सफलता, पहचान और उच्च पदस्थ लोगों का साथ देते हैं। इस महीने ऊँचा लक्ष्य रखें।

बुध पूरे महीने चंद्रमा से आपके नौवें भाव में रहते हैं।

शुक्र 6 नव० तक चंद्रमा से आपके नौवें भाव में हैं। 6 नव० को ये आपके आठवें भाव में आते हैं: आठवें भाव में शुक्र परंपरा में शुभ हैं: अचानक लाभ, जीवनसाथी के संसाधनों से सहायता और सुख। 22 नव० को ये आपके नौवें भाव में आते हैं: नौवें भाव में शुक्र सौभाग्य, सुखद यात्रा और आशीर्वाद लाते हैं। उत्सवों के लिए खुशी का समय।

मंगल 12 नव० तक चंद्रमा से आपके छठे भाव में हैं। 12 नव० को ये आपके सातवें भाव में आते हैं: सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या व्यापारिक साझेदार से बहस ला सकते हैं। बहस जीतने के बजाय धैर्य चुनें।

शुभ दिन: 1, 2, 10, 11, 12, 13, 14, 22, 23, 24, 29, 30। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 5 नव० – 7 नव०।

दिसंबर 2026

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर दशा (21 दिस० 2026 तक)।

सूर्य 16 दिस० तक चंद्रमा से आपके दसवें भाव में हैं। 16 दिस० को ये आपके ग्यारहवें भाव में आते हैं: ग्यारहवें भाव में सूर्य अपनी सबसे अच्छी स्थितियों में हैं: लाभ, पदोन्नति, शुभ समाचार और प्रभावशाली लोगों से मदद।

बुध 2 दिस० तक चंद्रमा से आपके नौवें भाव में हैं। 2 दिस० को ये आपके दसवें भाव में आते हैं: दसवें भाव में बुध काम के अनुकूल हैं: संवाद, सौदे, लेखन और आपके कौशल की पहचान। 22 दिस० को ये आपके ग्यारहवें भाव में आते हैं: ग्यारहवें भाव में बुध व्यापार, संपर्क, दोस्तों और समझदार विचारों से लाभ देते हैं।

शुक्र पूरे महीने चंद्रमा से आपके नौवें भाव में रहते हैं।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके सातवें भाव में रहते हैं।

इस महीने धीमे ग्रह

राहु 5 दिस० को राशि बदलते हैं। राहु चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में (5 दिस० – 31 दिस०): बारहवें भाव में राहु खर्च, नींद की समस्याएँ और विदेशी संबंध बढ़ा सकते हैं, जबकि छठे भाव में केतु पुरानी समस्याओं पर विजय में मदद करते हैं। खर्च पर नज़र रखें; विदेश में काम के लिए अच्छा।

शुभ दिन: 8, 9, 10, 11, 12, 20, 21, 26, 27। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 2 दिस० – 4 दिस०; 29 दिस० – 31 दिस०।

जनवरी 2027

सावधानी

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और सूर्य की प्रत्यंतर दशा (11 फ़र० 2027 तक)।

सूर्य 14 जन० तक चंद्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में हैं। 14 जन० को ये आपके बारहवें भाव में आते हैं: बारहवें भाव में सूर्य खर्च, थकान और बिना पहचान के मेहनत का भाव ला सकते हैं। अच्छा आराम करें और शुरुआत के बजाय योजना बनाएँ।

बुध 10 जन० तक चंद्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में हैं। 10 जन० को ये आपके बारहवें भाव में आते हैं: बारहवें भाव में बुध भ्रम, बेकार मेहनत और खर्च ला सकते हैं। ज़रूरी कागज़ों पर जल्दबाज़ी में हस्ताक्षर न करें। 28 जन० को ये आपके पहले भाव में आते हैं: चंद्र राशि पर बुध मन को व्यस्त रखते हैं: सीखने के लिए अच्छा, पर घबराहट और लापरवाह शब्दों से बचें।

शुक्र 1 जन० तक चंद्रमा से आपके नौवें भाव में हैं। 1 जन० को ये आपके दसवें भाव में आते हैं: दसवें भाव में शुक्र काम पर या अधिकार वाली महिलाओं से विवाद ला सकते हैं। पेशेवर और निजी जीवन अलग रखें। 29 जन० को ये आपके ग्यारहवें भाव में आते हैं: ग्यारहवें भाव में शुक्र बेहतरीन हैं: लाभ, सामाजिक सफलता, उपहार और मनोकामना की पूर्ति।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके सातवें भाव में रहते हैं।

इस महीने धीमे ग्रह

गुरु 25 जन० को राशि बदलते हैं। गुरु चंद्रमा से आपके छठे भाव में (25 जन० – 31 जन०): छठे भाव में गुरु काम को चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं, प्रतिस्पर्धा या सेहत पर ध्यान देना पड़ सकता है। नियमित दिनचर्या जीतती है; कर्ज़ और विवाद शुरू करने के बजाय सुलझाना बेहतर। सेवा और अनुशासन का फल मिलता है।

शुभ दिन: 4, 5, 6, 7, 8, 16, 17, 22, 23, 31। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 1 जन० – 1 जन०; 26 जन० – 28 जन०।

फ़रवरी 2027

सावधानी

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और चंद्र की प्रत्यंतर दशा (9 मई 2027 तक)।

सूर्य 13 फ़र० तक चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में हैं। 13 फ़र० को ये आपके पहले भाव में आते हैं: सूर्य आपकी चंद्र राशि पर गोचर कर रहे हैं: ऊर्जा और प्रतिष्ठा बढ़ती है, पर अधीरता भी। गुस्से और सेहत पर ध्यान दें, और अहंकार के टकराव से बचें।

बुध 24 फ़र० तक चंद्रमा से आपके पहले भाव में हैं। 24 फ़र० को ये आपके बारहवें भाव में आते हैं: बारहवें भाव में बुध भ्रम, बेकार मेहनत और खर्च ला सकते हैं। ज़रूरी कागज़ों पर जल्दबाज़ी में हस्ताक्षर न करें।

शुक्र 24 फ़र० तक चंद्रमा से आपके ग्यारहवें भाव में हैं। 24 फ़र० को ये आपके बारहवें भाव में आते हैं: बारहवें भाव में शुक्र सुख, अच्छी नींद और यात्रा या विलासिता पर सुखद खर्च लाते हैं; बस बजट बनाए रखें।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके सातवें भाव में रहते हैं।

शुभ दिन: 1, 2, 3, 4, 12, 13, 14, 19, 20, 27, 28। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 22 फ़र० – 24 फ़र०।

मार्च 2027

संतुलित

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और चंद्र की प्रत्यंतर दशा (9 मई 2027 तक)।

सूर्य 15 मार्च तक चंद्रमा से आपके पहले भाव में हैं। 15 मार्च को ये आपके दूसरे भाव में आते हैं: दूसरे भाव में सूर्य धन और परिवार को केंद्र में लाते हैं। खर्च और कड़वे शब्द बढ़ सकते हैं; नरमी से बोलें और बजट संभालें।

बुध 12 मार्च तक चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में हैं। 12 मार्च को ये आपके पहले भाव में आते हैं: चंद्र राशि पर बुध मन को व्यस्त रखते हैं: सीखने के लिए अच्छा, पर घबराहट और लापरवाह शब्दों से बचें।

शुक्र 21 मार्च तक चंद्रमा से आपके बारहवें भाव में हैं। 21 मार्च को ये आपके पहले भाव में आते हैं: चंद्र राशि पर शुक्र आकर्षण, सुख और सुखद संगत लाते हैं। प्रेम, सजने-सँवरने और जीवन का आनंद लेने के लिए अच्छा।

मंगल 10 मार्च तक चंद्रमा से आपके सातवें भाव में हैं। 10 मार्च को ये आपके छठे भाव में आते हैं: छठे भाव में मंगल बहुत शुभ हैं: आप विरोधियों पर भारी पड़ते हैं, कर्ज़ उतरता है और सेहत सुधरती है। कठिन समस्याएँ अभी सुलझाएँ।

शुभ दिन: 1, 2, 3, 12, 13, 18, 19, 27, 28, 29, 30, 31। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 22 मार्च – 24 मार्च।

अप्रैल 2027

संतुलित

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और चंद्र की प्रत्यंतर दशा (9 मई 2027 तक)।

सूर्य 14 अप्रैल तक चंद्रमा से आपके दूसरे भाव में हैं। 14 अप्रैल को ये आपके तीसरे भाव में आते हैं: तीसरे भाव में सूर्य अपनी सबसे अच्छी स्थितियों में हैं: साहस, पहल और अपनी मेहनत से सफलता। योजनाओं को आगे बढ़ाएँ।

बुध 5 अप्रैल तक चंद्रमा से आपके पहले भाव में हैं। 5 अप्रैल को ये आपके दूसरे भाव में आते हैं: दूसरे भाव में बुध कमाई, मोलभाव और प्रभावशाली वाणी में मदद करते हैं। आर्थिक योजना के लिए अच्छा समय। 22 अप्रैल को ये आपके तीसरे भाव में आते हैं: तीसरे भाव में बुध ढेर सारे संदेश और छोटी यात्राएँ लाते हैं, कुछ थकाने वाली भी। हस्ताक्षर से पहले दोबारा जाँचें।

शुक्र 15 अप्रैल तक चंद्रमा से आपके पहले भाव में हैं। 15 अप्रैल को ये आपके दूसरे भाव में आते हैं: दूसरे भाव में शुक्र आय, अच्छे भोजन और परिवार में सामंजस्य में सहायक हैं। सोची-समझी खरीदारी के लिए सुखद समय।

मंगल 26 अप्रैल तक चंद्रमा से आपके छठे भाव में हैं। 26 अप्रैल को ये आपके सातवें भाव में आते हैं: सातवें भाव में मंगल जीवनसाथी या व्यापारिक साझेदार से बहस ला सकते हैं। बहस जीतने के बजाय धैर्य चुनें।

शुभ दिन: 8, 9, 14, 15, 16, 23, 24, 25, 26, 27। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 18 अप्रैल – 20 अप्रैल।

मई 2027

संतुलित

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और मंगल की प्रत्यंतर दशा (8 जुलै 2027 तक)।

सूर्य 15 मई तक चंद्रमा से आपके तीसरे भाव में हैं। 15 मई को ये आपके चौथे भाव में आते हैं: चौथे भाव में सूर्य घर की शांति और मन को अस्थिर कर सकते हैं। माता-पिता की सेहत का ध्यान रखें और संपत्ति विवाद से बचें।

बुध 6 मई तक चंद्रमा से आपके तीसरे भाव में हैं। 6 मई को ये आपके चौथे भाव में आते हैं: चौथे भाव में बुध पढ़ाई, परिवार में सामंजस्य और संपत्ति या वाहन के मामलों में सहायक हैं। 23 मई को ये आपके पाँचवें भाव में आते हैं: पाँचवें भाव में बुध ध्यान बिखेर सकते हैं और संतान या परीक्षा की चिंता ला सकते हैं। पढ़ाई की योजना बनाएँ और उस पर टिके रहें।

शुक्र 10 मई तक चंद्रमा से आपके दूसरे भाव में हैं। 10 मई को ये आपके तीसरे भाव में आते हैं: तीसरे भाव में शुक्र लोकप्रियता, शुभ समाचार और खुशनुमा छोटी यात्राएँ देते हैं। रचनात्मक और सामाजिक योजनाएँ अच्छी चलती हैं।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके सातवें भाव में रहते हैं।

शुभ दिन: 5, 6, 7, 12, 13, 21, 22, 23, 24। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 15 मई – 17 मई।

जून 2027

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, राहु की अंतर्दशा और मंगल की प्रत्यंतर दशा (8 जुल० 2027 तक)।

सूर्य 15 जून तक चंद्रमा से आपके चौथे भाव में हैं। 15 जून को ये आपके पाँचवें भाव में आते हैं: पाँचवें भाव में सूर्य संतान या पढ़ाई की चिंता और धुँधला विवेक ला सकते हैं। सट्टे से बचें और धैर्य रखें।

बुध पूरे महीने चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में रहते हैं।

शुक्र 4 जून तक चंद्रमा से आपके तीसरे भाव में हैं। 4 जून को ये आपके चौथे भाव में आते हैं: चौथे भाव में शुक्र घर के सुख, वाहन और परिवार में शांति के अनुकूल हैं। घर सजाने के लिए अच्छा समय। 28 जून को ये आपके पाँचवें भाव में आते हैं: पाँचवें भाव में शुक्र प्रेम, रचनात्मकता और संतान के लिए बहुत शुभ हैं। रोमांस और शौक फलते-फूलते हैं।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके सातवें भाव में रहते हैं।

इस महीने धीमे ग्रह

गुरु 26 जून को राशि बदलते हैं। गुरु चंद्रमा से आपके सातवें भाव में (26 जून – 30 जून): सातवें भाव में गुरु साझेदारी, विवाह और अनुबंधों के पक्ष में हैं। रिश्ते गहरे होते हैं, अच्छे सलाहकार मिलते हैं और व्यापारिक सौदे अच्छे चलते हैं। सगाई, विवाह और नए सहयोग के लिए पारंपरिक रूप से अच्छा समय।

शनि 3 जून को राशि बदलते हैं। शनि चंद्रमा से आपके तीसरे भाव में (3 जून – 30 जून): तीसरे भाव में शनि उनके सबसे अच्छे गोचरों में से हैं: साहस, मेहनत और लगन का फल मिलता है और बाधाएँ हटती हैं। कड़ी मेहनत, हुनर, छोटे उद्यम और निर्णायक कदमों के लिए मज़बूत समय।

शुभ दिन: 2, 3, 8, 9, 17, 18, 19, 20, 21, 29, 30। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 11 जून – 14 जून।

जुलाई 2027

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, गुरु की अंतर्दशा और गुरु की प्रत्यंतर दशा (9 नव० 2027 तक)।

सूर्य 17 जुल० तक चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में हैं। 17 जुल० को ये आपके छठे भाव में आते हैं: छठे भाव में सूर्य बहुत शुभ हैं: विरोधी पीछे हटते हैं, सेहत सुधरती है और अटके काम पूरे होते हैं। मुकाबले के लिए अच्छा महीना।

बुध 30 जुल० तक चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में हैं। 30 जुल० को ये आपके छठे भाव में आते हैं: छठे भाव में बुध समस्याएँ सुलझाने, बहस जीतने और काम व सेहत की दिनचर्या व्यवस्थित करने में मदद करते हैं।

शुक्र 23 जुल० तक चंद्रमा से आपके पाँचवें भाव में हैं। 23 जुल० को ये आपके छठे भाव में आते हैं: छठे भाव में शुक्र प्रेम में मतभेद, भोग-विलास से सेहत की छोटी परेशानियाँ और अचानक खर्च ला सकते हैं। सुखों में संयम रखें।

मंगल 5 जुल० तक चंद्रमा से आपके सातवें भाव में हैं। 5 जुल० को ये आपके आठवें भाव में आते हैं: आठवें भाव में मंगल सेहत, दुर्घटना और साझा धन को लेकर खास सावधानी माँगते हैं। जोखिम भरे काम और तीखे टकराव से बचें।

शुभ दिन: 5, 6, 14, 15, 16, 17, 18, 26, 27, 28। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 9 जुल० – 11 जुल०।

अगस्त 2027

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, गुरु की अंतर्दशा और गुरु की प्रत्यंतर दशा (9 नव० 2027 तक)।

सूर्य 17 अग० तक चंद्रमा से आपके छठे भाव में हैं। 17 अग० को ये आपके सातवें भाव में आते हैं: राशि के सामने, सातवें भाव में सूर्य साझेदारी में तनाव और थकाने वाली यात्रा ला सकते हैं। बीच का रास्ता अपनाएँ और ज़िद से बचें।

बुध 14 अग० तक चंद्रमा से आपके छठे भाव में हैं। 14 अग० को ये आपके सातवें भाव में आते हैं: सातवें भाव में बुध साथी या ग्राहकों से ग़लतफ़हमी ला सकते हैं। समझौते लिखित में साफ़ करें। 31 अग० को ये आपके आठवें भाव में आते हैं: आठवें भाव में बुध परंपरा में शुभ हैं: शोध, विरासत के मामले और ज्ञान से अचानक लाभ।

शुक्र 16 अग० तक चंद्रमा से आपके छठे भाव में हैं। 16 अग० को ये आपके सातवें भाव में आते हैं: सातवें भाव में शुक्र साझेदारी और आकर्षण को बढ़ाते हैं, पर प्रलोभन और ज़्यादा खर्च भी। प्रतिबद्धताएँ साफ़ रखें।

मंगल 24 अग० तक चंद्रमा से आपके आठवें भाव में हैं। 24 अग० को ये आपके नौवें भाव में आते हैं: नौवें भाव में मंगल बड़ों या गुरुओं से मतभेद और जल्दबाज़ी वाली यात्रा ला सकते हैं। असहमति में भी सलाह का सम्मान करें।

शुभ दिन: 2, 3, 10, 11, 12, 13, 14, 23, 24, 29, 30। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 5 अग० – 7 अग०।

सितंबर 2027

अनुकूल

आपकी दशा: शनि की महादशा, गुरु की अंतर्दशा और गुरु की प्रत्यंतर दशा (9 नव० 2027 तक)।

सूर्य 17 सित० तक चंद्रमा से आपके सातवें भाव में हैं। 17 सित० को ये आपके आठवें भाव में आते हैं: आठवें भाव में सूर्य सेहत, धन और अधिकारियों के मामले में सावधानी माँगते हैं। सादगी से रहें और बेवजह जोखिम न लें।

बुध 21 सित० तक चंद्रमा से आपके आठवें भाव में हैं। 21 सित० को ये आपके नौवें भाव में आते हैं: नौवें भाव में बुध योजनाओं में देरी और संदेह ला सकते हैं। पढ़ें, सीखें और फ़ैसले से पहले स्पष्टता का इंतज़ार करें।

शुक्र 9 सित० तक चंद्रमा से आपके सातवें भाव में हैं। 9 सित० को ये आपके आठवें भाव में आते हैं: आठवें भाव में शुक्र परंपरा में शुभ हैं: अचानक लाभ, जीवनसाथी के संसाधनों से सहायता और सुख।

मंगल पूरे महीने चंद्रमा से आपके नौवें भाव में रहते हैं।

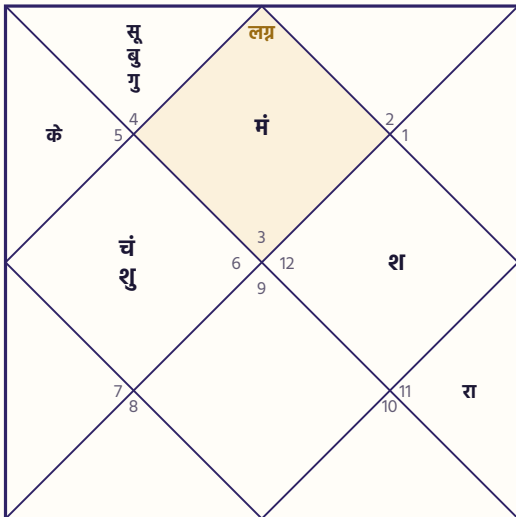
शुभ दिन: 7, 8, 9, 10, 11, 19, 20, 26, 27। संभलकर चलें (चंद्राष्टम): 2 सित० – 4 सित०; 29 सित० – 30 सित०।

17

वर्षफल: आपका 35वाँ वर्ष

वर्षफल ताजिक पद्धति की वार्षिक कुंडली है, जो हर साल उस क्षण के लिए बनती है जब सूर्य आपके जन्म के सटीक अंश पर लौटता है। इसे जन्म कुंडली के साथ पढ़ा जाता है: जन्म कुंडली बताती है कि क्या लिखा है, और वर्ष कुंडली बताती है कि उसमें से इस साल क्या आगे आएगा।

वर्ष कुंडली

**साल की शुरुआत (वर्ष प्रवेश)****16 अग० 2026, 3:31 am****अगली वर्ष कुंडली****16 अग० 2027, 9:42 am****वर्ष लग्न****मिथुन****मुंथा****कर्क, 2 भाव**

आपके जन्मस्थान के लिए बनाई गई। जो ज्योतिषी उस साल के निवास स्थान से वर्ष कुंडली बनाते हैं, उन्हें वर्ष लग्न में थोड़ा अंतर मिल सकता है।

मुंथा: साल की दिशा

मुंथा आपके जन्म लग्न से शुरू होकर हर साल एक राशि आगे बढ़ती है। वर्ष कुंडली में इसका भाव साल का स्वर तय करता है।

दूसरे भाव में मुंथा: धन लाभ और परिवार में सुख; आपकी वाणी का वज़न रहता है और बचत बढ़ सकती है।

मुंथा राशि के स्वामी चंद्र वर्ष कुंडली के चौथे भाव में कन्या राशि में हैं; इनकी स्थिति बताती है कि मुंथा कितना पूरा फल देगी।

वर्ष लग्न और उसका स्वामी

वर्ष लग्न के स्वामी बुध वर्ष कुंडली के दूसरे भाव में हैं। इस साल के लिए पढ़ें: लग्नेश आपके दूसरे भाव में: धन, परिवार और वाणी आपके जीवन के केंद्र में हैं। कमाने की क्षमता अच्छी है, परिवार आपके लिए बहुत मायने रखता है और आपके शब्दों का वज़न है, इसलिए उन्हें प्यार से इस्तेमाल करें।

मुद्रा दशा: साल की ग्रह दशाएँ

मुद्रा दशा विशेत्तरी चक्र को इसी एक साल में समेट देती है, वर्ष कुंडली में चंद्रमा के नक्षत्र स्वामी से शुरू होकर। हर ग्रह का समय वर्ष कुंडली में उसके भावों के विषय आगे लाता है।

ग्रह	से	तक	विषय
चंद्र	15 अग० 2026	15 सित० 2026	धन, परिवार और वाणी; घर, माता, संपत्ति और वाहन
मंगल	15 सित० 2026	6 अक्टू० 2026	नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा
राहु . अभी	6 अक्टू० 2026	30 नव० 2026	भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ
गुरु	30 नव० 2026	18 जन० 2027	विवाह, साझेदार और व्यापार; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; धन, परिवार और वाणी
शनि	18 जन० 2027	16 मार्च 2027	बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन
बुध	16 मार्च 2027	7 मई 2027	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; घर, माता, संपत्ति और वाहन; धन, परिवार और वाणी
केतु	7 मई 2027	28 मई 2027	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ
शुक्र	28 मई 2027	28 जुल० 2027	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; घर, माता, संपत्ति और वाहन
सूर्य	28 जुल० 2027	16 अग० 2027	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; धन, परिवार और वाणी

18

जीवन भर की दशाएँ

हर महादशा नौ अंतर्दशाओं में बँटती है, और हर अंतर्दशा नौ प्रत्यंतर दशाओं में। विषय उन भावों से आते हैं जिनके स्वामी हर ग्रह आपकी कुंडली में हैं और जिनमें वे बैठे हैं।

राहु की महादशा			अग० 1992 – जन० 1995
राहु की महादशा (18 वर्ष) महत्वाकांक्षा, बदलाव और अप्रत्याशित घटनाएँ लाती है: अचानक उन्नति, विदेशी संबंध, तकनीक और लीक से हटकर रास्ते। यह भ्रम और बेचैनी भी ला सकती है। स्पष्ट लक्ष्य और नैतिकता इसे बहुत फलदायी बनाते हैं। आपकी कुंडली में राहु आपके चौथे भाव में धनु राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: घर, माता, संपत्ति और वाहन।			
चंद्र	अग० 1992 – जन० 1994	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)	
मंगल	जन० 1994 – जन० 1995	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (मिश्रित)	

गुरु की महादशा			जन० 1995 – जन० 2011
गुरु की महादशा (16 वर्ष) परंपरा में विकास का समय है: ज्ञान, विवेक, संतान, धन और अच्छी सलाह। गुरु और मार्गदर्शक मिलते हैं, और आस्था गहरी होती है। इसका फल आपकी कुंडली में गुरु के बल पर निर्भर करता है। आपकी कुंडली में गुरु आपके चौथे भाव और सातवें भाव के स्वामी हैं और आपके बारहवें भाव में सिंह राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन।			
गुरु	जन० 1995 – मार्च 1997	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन	
शनि	मार्च 1997 – सित० 1999	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)	
बुध	सित० 1999 – दिस० 2001	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)	
केतु	दिस० 2001 – दिस० 2002	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)	
शुक्र	दिस० 2002 – अग० 2005	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)	
सूर्य	अग० 2005 – मई 2006	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (सहज)	
चंद्र	मई 2006 – सित० 2007	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)	
मंगल	सित० 2007 – अग० 2008	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (सहज)	
राहु	अग० 2008 – जन० 2011	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)	

शनि की महादशा - अभी			जन० 2011 – जन० 2030
शनि की महादशा (19 वर्ष) धैर्य, अनुशासन और कड़ी मेहनत का फल देती है। प्रगति धीमी पर टिकाऊ होती है, और ज़िम्मेदारियाँ बढ़ती हैं। देरी और थकान परीक्षाएँ हैं; निरंतर प्रयास आगे के जीवन की मज़बूत नींव बनाता है। आपकी कुंडली में शनि आपके पाँचवें भाव और छठे भाव के स्वामी हैं और आपके पाँचवें भाव में मकर राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी।			
शनि	जन० 2011 – जन० 2014	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी	

बुध	जन० 2014 – अक्टू० 2016	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)
केतु	अक्टू० 2016 – नव० 2017	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)
शुक्र	नव० 2017 – जन० 2021	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (सहज)
सूर्य	जन० 2021 – दिस० 2021	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (परीक्षा वाली)
चंद्र	दिस० 2021 – जुल० 2023	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)
मंगल	जुल० 2023 – सित० 2024	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (मिश्रित)
राहु • अभी	सित० 2024 – जुल० 2027	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)

शनि – राहु की प्रत्यंतर दशाएँ

राहु: 1 सित० 2024 – 4 फ़र० 2025	गुरु: 4 फ़र० 2025 – 22 जून 2025	शनि: 22 जून 2025 – 4 दिस० 2025
बुध: 4 दिस० 2025 – 1 मई 2026	केतु: 1 मई 2026 – 30 जून 2026	शुक्र: 30 जून 2026 – 21 दिस० 2026
सूर्य: 21 दिस० 2026 – 11 फ़र० 2027	चंद्र: 11 फ़र० 2027 – 9 मई 2027	मंगल: 9 मई 2027 – 8 जुल० 2027

गुरु	जुल० 2027 – जन० 2030	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)
------	----------------------	---

शनि – गुरु की प्रत्यंतर दशाएँ

गुरु: 8 जुल० 2027 – 9 नव० 2027	शनि: 9 नव० 2027 – 3 अप्रैल 2028	बुध: 3 अप्रैल 2028 – 12 अग० 2028
केतु: 12 अग० 2028 – 5 अक्टू० 2028	शुक्र: 5 अक्टू० 2028 – 9 मार्च 2029	सूर्य: 9 मार्च 2029 – 24 अप्रैल 2029
चंद्र: 24 अप्रैल 2029 – 10 जुल० 2029	मंगल: 10 जुल० 2029 – 2 सित० 2029	राहु: 2 सित० 2029 – 19 जन० 2030

बुध की महादशा

जन० 2030 – जन० 2047

बुध की महादशा (17 वर्ष) पढ़ाई, संवाद, व्यापार, लेखन और कौशल के अनुकूल है। मन सक्रिय रहता है और व्यापार व संपर्कों से अवसर आते हैं। घबराहट और बिखरा ध्यान संभालने की चीज़ें हैं।

आपकी कुंडली में बुध आपके पहले भाव और दसवें भाव के स्वामी हैं और आपके ग्यारहवें भाव में कर्क राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ।

बुध	जन० 2030 – जून 2032	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ
-----	---------------------	--

बुध की दशा की प्रत्यंतर दशाएँ

बुध: 19 जन० 2030 – 23 मई 2030	केतु: 23 मई 2030 – 14 जुल० 2030	शुक्र: 14 जुल० 2030 – 7 दिस० 2030
सूर्य: 7 दिस० 2030 – 20 जन० 2031	चंद्र: 20 जन० 2031 – 4 अप्रैल 2031	मंगल: 4 अप्रैल 2031 – 25 मई 2031
राहु: 25 मई 2031 – 4 अक्टू० 2031	गुरु: 4 अक्टू० 2031 – 29 जन० 2032	शनि: 29 जन० 2032 – 16 जून 2032

केतु	जून 2032 – जून 2033	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)
शुक्र	जून 2033 – अप्रैल 2036	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (सहज)

सूर्य	अप्रैल 2036 – फ़र॰ 2037	ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)
चंद्र	फ़र॰ 2037 – जुल॰ 2038	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (सहज)
मंगल	जुल॰ 2038 – जुल॰ 2039	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (परीक्षा वाली)
राहु	जुल॰ 2039 – फ़र॰ 2042	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	फ़र॰ 2042 – मई 2044	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (परीक्षा वाली)
शनि	मई 2044 – जन॰ 2047	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (सहज)

केतु की महादशा

जन॰ 2047 – जन॰ 2054

केतु की महादशा (7 वर्ष) ध्यान को भीतर मोड़ती है: वैराग्य, आध्यात्मिकता, शोध और छोड़ना सीखना। बाहरी जीवन अचानक बदल सकता है या अनिश्चित लग सकता है। ध्यान और सादगी इसकी अंतर्दृष्टि पाने में मदद करते हैं।

आपकी कुंडली में केतु आपके दसवें भाव में मिथुन राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: करियर, पद और सार्वजनिक जीवन।

केतु	जन॰ 2047 – जून 2047	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन
शुक्र	जून 2047 – अग॰ 2048	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)
सूर्य	अग॰ 2048 – दिस॰ 2048	ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)
चंद्र	दिस॰ 2048 – जुल॰ 2049	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)
मंगल	जुल॰ 2049 – दिस॰ 2049	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (मिश्रित)
राहु	दिस॰ 2049 – जन॰ 2051	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	जन॰ 2051 – दिस॰ 2051	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)
शनि	दिस॰ 2051 – जन॰ 2053	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)
बुध	जन॰ 2053 – जन॰ 2054	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)

शुक्र की महादशा

जन॰ 2054 – जन॰ 2074

शुक्र की महादशा (20 वर्ष) सुख, संबंध, विवाह, कला और भौतिक आनंद लाती है। यह अक्सर समृद्धि और आनंद का समय होता है। संयम इसके सुखों को अति में बदलने से रोकता है।

आपकी कुंडली में शुक्र आपके दूसरे भाव और नौवें भाव के स्वामी हैं और आपके बारहवें भाव में सिंह राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन।

शुक्र	जन॰ 2054 – मई 2057	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन
सूर्य	मई 2057 – मई 2058	ख़र्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (परीक्षा वाली)
चंद्र	मई 2058 – जन॰ 2060	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)

मंगल	जन० 2060 – मार्च 2061	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (मिश्रित)
राहु	मार्च 2061 – मार्च 2064	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	मार्च 2064 – नव० 2066	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (परीक्षा वाली)
शनि	नव० 2066 – जन० 2070	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (सहज)
बुध	जन० 2070 – नव० 2072	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (सहज)
केतु	नव० 2072 – जन० 2074	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)

सूर्य की महादशा

जन० 2074 – जन० 2080

सूर्य की महादशा (6 वर्ष) अधिकार, करियर और आत्मविश्वास को केंद्र में लाती है। वरिष्ठों या सरकार से पहचान संभव है, साथ ही अहंकार के टकराव भी। हृदय और आँखों का स्वास्थ्य और पिता से संबंध इसके विषय हैं।
आपकी कुंडली में सूर्य आपके बारहवें भाव के स्वामी हैं और आपके ग्यारहवें भाव में कर्क राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ।

सूर्य	जन० 2074 – मई 2074	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ
चंद्र	मई 2074 – नव० 2074	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (सहज)
मंगल	नव० 2074 – मार्च 2075	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (सहज)
राहु	मार्च 2075 – फ़र० 2076	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	फ़र० 2076 – नव० 2076	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (सहज)
शनि	नव० 2076 – नव० 2077	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (परीक्षा वाली)
बुध	नव० 2077 – सित० 2078	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (सहज)
केतु	सित० 2078 – जन० 2079	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)
शुक्र	जन० 2079 – जन० 2080	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (परीक्षा वाली)

चंद्र की महादशा

जन० 2080 – जन० 2090

चंद्रमा की महादशा (10 वर्ष) मन, भावनाओं, घर और माता पर ज़ोर देती है। लोकप्रियता और जनता से व्यवहार बढ़ता है, और जीवन अधिक परिवर्तनशील लग सकता है। भावनात्मक संतुलन और स्थिर घर इसका अच्छा उपयोग करने की कुंजी हैं।
आपकी कुंडली में चंद्र आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं और आपके छठे भाव में कुंभ राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी।

चंद्र	जन० 2080 – नव० 2080	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी
मंगल	नव० 2080 – जून 2081	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ (सहज)

राहु	जून 2081 – दिस० 2082	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	दिस० 2082 – अप्रैल 2084	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (सहज)
शनि	अप्रैल 2084 – नव० 2085	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (परीक्षा वाली)
बुध	नव० 2085 – अप्रैल 2087	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (परीक्षा वाली)
केतु	अप्रैल 2087 – नव० 2087	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)
शुक्र	नव० 2087 – जुल० 2089	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (परीक्षा वाली)
सूर्य	जुल० 2089 – जन० 2090	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (सहज)

मंगल की महादशा		जन० 2090 – जन० 2097
मंगल की महादशा (7 वर्ष) ऊर्जा, साहस और कर्म लाती है: संपत्ति, भाई-बहन, प्रतिस्पर्धा और तकनीकी काम आगे आते हैं। मेहनत से नतीजे जल्दी मिलते हैं। गुस्से, दुर्घटनाओं और विवादों में सावधानी चाहिए। आपकी कुंडली में मंगल आपके तीसरे भाव और आठवें भाव के स्वामी हैं और आपके नौवें भाव में वृषभ राशि में बैठे हैं। इस महादशा में इन भावों के विषय आगे आते हैं: साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ।		
मंगल	जन० 2090 – जून 2090	साहस, भाई-बहन और छोटी यात्राएँ; बदलाव, शोध, साझा धन और छिपे मामले; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ
राहु	जून 2090 – जुल० 2091	घर, माता, संपत्ति और वाहन (मिश्रित)
गुरु	जुल० 2091 – जून 2092	घर, माता, संपत्ति और वाहन; विवाह, साझेदार और व्यापार; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (सहज)
शनि	जून 2092 – जुल० 2093	संतान, पढ़ाई, प्रेम और रचनात्मकता; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (परीक्षा वाली)
बुध	जुल० 2093 – जुल० 2094	स्वयं, स्वास्थ्य और जीवन की दिशा; करियर, पद और सार्वजनिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (मिश्रित)
केतु	जुल० 2094 – दिस० 2094	करियर, पद और सार्वजनिक जीवन (मिश्रित)
शुक्र	दिस० 2094 – फ़र० 2096	धन, परिवार और वाणी; भाग्य, पिता, गुरु, आस्था और लंबी यात्राएँ; खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन (मिश्रित)
सूर्य	फ़र० 2096 – जून 2096	खर्च, विदेश, विश्राम और आध्यात्मिक जीवन; लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ (सहज)
चंद्र	जून 2096 – जन० 2097	लाभ, आय, मित्र और महत्वाकांक्षाएँ; नौकरी, सेवा, स्वास्थ्य और विरोधी (मिश्रित)

19

योगिनी दशा

योगिनी दशा आठ योगिनियों का 36 साल का छोटा चक्र है, हर योगिनी एक ग्रह से जुड़ी है। ज्योतिषी इसे विशोत्तरी दशा के साथ पढ़ते हैं: जब दोनों एक ही दिशा दिखाएँ, तो फल ज्यादा पक्का होता है।

योगिनी	ग्रह	वर्ष	से	तक
धान्या	गुरु	3	15 अग० 1992	10 जन० 1993
भ्रामरी	मंगल	4	10 जन० 1993	10 जन० 1997
भद्रिका	बुध	5	10 जन० 1997	10 जन० 2002
उल्का	शनि	6	10 जन० 2002	10 जन० 2008
सिद्धा	शुक्र	7	10 जन० 2008	10 जन० 2015
संकटा	राहु	8	10 जन० 2015	10 जन० 2023
मंगला	चंद्र	1	10 जन० 2023	10 जन० 2024
पिगला	सूर्य	2	10 जन० 2024	10 जन० 2026
धान्या . अभी	गुरु	3	10 जन० 2026	9 जन० 2029
भ्रामरी	मंगल	4	9 जन० 2029	9 जन० 2033
भद्रिका	बुध	5	9 जन० 2033	10 जन० 2038

20

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्ग में सातों ग्रह और लग्न हर राशि को शुभ अंक (बिंदु) देते हैं। सर्वाष्टकवर्ग (कुल) में 28 या अधिक अंक वाली राशि मज़बूत है: वहाँ के भाव और गोचर अच्छे रहते हैं। 25 से कम अंक पर ज्यादा ध्यान चाहिए।

सर्वाष्टकवर्ग (कुल)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन
29	33	34	31	19	26	21	31	33	23	27	30

आपके लिए सबसे मज़बूत राशियाँ: मिथुन (34), वृषभ (33), धनु (33)।

ज़्यादा ध्यान वाली राशियाँ: सिंह (19), तुला (21), मकर (23)।

हर ग्रह के अंक (भिन्नाष्टकवर्ग)

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि	धनु	मकर	कुंभ	मीन	कुल
सू	5	3	4	5	4	2	2	5	5	5	5	3	48
चं	4	5	5	5	2	3	3	6	3	3	7	3	49
मं	3	4	4	5	2	4	1	5	4	3	2	2	39
बु	4	4	6	5	3	5	3	6	6	3	3	6	54
गु	3	7	6	3	5	4	5	3	6	3	4	7	56
शु	6	7	4	2	2	6	5	4	5	3	2	6	52
श	4	3	5	6	1	2	2	2	4	3	4	3	39

21

मंगल दोष और शनि

आपकी कुंडली में मंगल दोष नहीं है।

लग्न से: नहीं। चंद्रमा से: हाँ।

परंपरा में दोनों साथियों को मंगल दोष हो तो इसे संतुलित माना जाता है, और यह मिलान के कई कारकों में से केवल एक है।

साढ़ेसाती और डैय्या

साढ़ेसाती लगभग साढ़े सात साल की वह अवधि है जब शनि आपकी चंद्र राशि से बारहवें, पहले और दूसरे भाव से गुजरते हैं; डैय्या ढाई साल की वह अवधि है जब शनि चौथे या आठवें भाव में होते हैं।

अभी चल रही: साढ़ेसाती, अंतिम चरण

मार्च 2025 – फ़रवरी 2028

आने वाली

- अगस्त 2029 – मई 2032: डैय्या (चंद्रमा से चौथे भाव में शनि)
- अक्टूबर 2038 – सितंबर 2041: डैय्या (चंद्रमा से आठवें भाव में शनि)
- मार्च 2049 – फ़रवरी 2052: साढ़ेसाती, आरंभिक चरण
- फ़रवरी 2052 – मई 2054: साढ़ेसाती, चरम चरण

22

आपके लिए वर्ष 2027

2027 में धीमे ग्रहों का गोचर आपकी चंद्र राशि से कैसा है।

गुरु · सिंह · सातवें भाव

1 जनवरी 2027 – 24 जनवरी 2027

सातवें भाव में गुरु साझेदारी, विवाह और अनुबंधों के पक्ष में हैं। रिश्ते गहरे होते हैं, अच्छे सलाहकार मिलते हैं और व्यापारिक सौदे अच्छे चलते हैं। सगाई, विवाह और नए सहयोग के लिए पारंपरिक रूप से अच्छा समय।

गुरु · कर्क · छठे भाव

24 जनवरी 2027 – 25 जून 2027

छठे भाव में गुरु काम को चुनौतीपूर्ण बना सकते हैं, प्रतिस्पर्धा या सेहत पर ध्यान देना पड़ सकता है। नियमित दिनचर्या जीतती है; कर्ज़ और विवाद शुरू करने के बजाय सुलझाना बेहतर। सेवा और अनुशासन का फल मिलता है।

गुरु · सिंह · सातवें भाव

25 जून 2027 – 26 नवंबर 2027

सातवें भाव में गुरु साझेदारी, विवाह और अनुबंधों के पक्ष में हैं। रिश्ते गहरे होते हैं, अच्छे सलाहकार मिलते हैं और व्यापारिक सौदे अच्छे चलते हैं। सगाई, विवाह और नए सहयोग के लिए पारंपरिक रूप से अच्छा समय।

गुरु . कन्या . आठवें भाव

26 नव० 2027 – 1 जन० 2028

आठवें भाव में गुरु का गोचर परंपरागत रूप से परीक्षा लेने वाला माना जाता है: अचानक बदलाव, देरी या छिपे खर्च संभव हैं। यह जोखिम से ज्यादा शोध, बीमा, विरासत के मामलों और आध्यात्मिक अध्ययन के पक्ष में है। सावधानी से चलें और बचत रखें।

शनि . मीन . दूसरे भाव

1 जन० 2027 – 3 जून 2027

दूसरे भाव में शनि, साढ़ेसाती का अंतिम चरण, धन को तंग कर सकते हैं और परिवार या वाणी की परीक्षा ले सकते हैं। बचत करें, कठोर शब्दों से बचें और पुरानी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें; यह चरण ख़त्म होते-होते दबाव कम हो रहा है।

शनि . मेष . तीसरे भाव

3 जून 2027 – 20 अक्टू० 2027

तीसरे भाव में शनि उनके सबसे अच्छे गोचरों में से हैं: साहस, मेहनत और लगन का फल मिलता है और बाधाएँ हटती हैं। कड़ी मेहनत, हुनर, छोटे उद्यम और निर्णायक कदमों के लिए मज़बूत समय।

शनि . मीन . दूसरे भाव

20 अक्टू० 2027 – 1 जन० 2028

दूसरे भाव में शनि, साढ़ेसाती का अंतिम चरण, धन को तंग कर सकते हैं और परिवार या वाणी की परीक्षा ले सकते हैं। बचत करें, कठोर शब्दों से बचें और पुरानी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें; यह चरण ख़त्म होते-होते दबाव कम हो रहा है।

राहु . मकर . बारहवें भाव

1 जन० 2027 – 1 जन० 2028

बारहवें भाव में राहु खर्च, नींद की समस्याएँ और विदेशी संबंध बढ़ा सकते हैं, जबकि छठे भाव में केतु पुरानी समस्याओं पर विजय में मदद करते हैं। खर्च पर नज़र रखें; विदेश में काम के लिए अच्छा।

23

आपकी कुंडली के उपाय

ये वे ग्रह हैं जिन्हें आपकी कुंडली में अभी सबसे ज़्यादा सहयोग चाहिए, और क्यों। हर ग्रह के लिए: उसका बीज मंत्र, देवता, दान, रुद्राक्ष और परंपरा में बताया गया आचरण। जो एक-दो उपाय मन को ठीक लगे उन्हें नियमित रूप से करें; कभी-कभार किए कई उपायों से श्रद्धा से रोज़ किया छोटा उपाय ज़्यादा फल देता है।

शनि Saturn

कारण: आपकी चल रही महादशा के स्वामी; साढ़ेसाती या ढैया चल रही है।

बीज मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ॥

रोज़ 108 बार (एक माला) जाप करें, या कम से कम हर शनिवार को। पूरा पारंपरिक अनुष्ठान 23,000 जाप, यानी लगभग 213 माला, 40 दिनों में।

शनि अनुशासन, परिश्रम, न्याय और देरी का ग्रह है। परंपरा के अनुसार शनि बीज मंत्र धैर्य और लगन के लिए, देरी के बाद स्थिर प्रगति के लिए, और साढ़ेसाती, ढैया या शनि की कठिन महादशा में राहत के लिए जपा जाता है।

इसका दिन शनिवार है और शाम का समय पारंपरिक माना जाता है। बहुत से लोग पीपल के नीचे या शनि मंदिर में तिल के तेल का दीपक जलाते हैं, काले या गहरे नीले वस्त्र पहनते हैं, और हनुमान चालीसा का पाठ भी करते हैं, क्योंकि मान्यता है कि शनिदेव हनुमान जी के भक्तों को कष्ट नहीं देते।

पूजा: हनुमान जी, शनि देव और भगवान शिव

दान: शनिवार को ज़रूरतमंदों को काले तिल, सरसों का तेल, उड़द दाल, लोहा या गर्म कपड़े

रुद्राक्ष: 7 मुखी

रंग: गहरा नीला और काला

आचरण: बुजुर्गों, कर्मचारियों और गरीबों की सेवा करें, समय के पाबंद और धैर्यवान रहें, और शॉर्टकट से बचें: शनि विनम्रता और ईमानदार मेहनत से मज़बूत होते हैं।

astroanktara.com पर पढ़ें: शनि चालीसा (astroanktara.com/hi/chalisa/shani-chalisa) और शनि बीज मंत्र (-astroanktara.com/hi/mantra/shani-beej-mantra)।

चंद्र Moon

कारण: आपके छठे भाव में।

बीज मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः ॥

रोज़ 108 बार (एक माला) जाप करें, या कम से कम हर सोमवार को। पूरा पारंपरिक अनुष्ठान 11,000 जाप, यानी लगभग 102 माला, 40 दिनों में।

वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा मन और भावनाओं का कारक है। परंपरा के अनुसार चंद्र बीज मंत्र शांत और स्थिर मन, अच्छी नींद, भावनात्मक संतुलन और माता से अच्छे संबंधों के लिए जपा जाता है, खासकर जब कुंडली में चंद्रमा कमज़ोर या पीड़ित हो।

इसका दिन सोमवार है। बहुत से लोग शाम को या पूर्णिमा की रात सफ़ेद वस्त्र पहनकर इसका जाप करते हैं, और कुछ लोग भगवान शिव को, जिनके मस्तक पर चंद्रमा सुशोभित है, दूध या जल चढ़ाते हैं।

पूजा: भगवान शिव (शिवलिंग पर जल या दूध) और माँ भगवती

दान: सोमवार को चावल, दूध, सफ़ेद वस्त्र या चाँदी

रुद्राक्ष: 2 मुखी

रंग: सफ़ेद और चाँदी जैसा

आचरण: माता की सेवा करें, पर्याप्त पानी पिँ, शाम शांत रखें और परेशान होकर फ़ैसले न लें: चंद्रमा मन की शांति से मज़बूत होते हैं।

astroanktara.com पर पढ़ें: शिव चालीसा (astroanktara.com/hi/chalisa/shiv-chalisa) और चंद्र बीज मंत्र (- astroanktara.com/hi/mantra/chandra-beej-mantra)।

गुरु Jupiter

कारण: आपके बारहवें भाव में।

बीज मंत्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रीं सः गुरवे नमः ॥

रोज़ 108 बार (एक माला) जाप करें, या कम से कम हर गुरुवार को। पूरा पारंपरिक अनुष्ठान 19,000 जाप, यानी लगभग 176 माला, 40 दिनों में।

गुरु, यानी बृहस्पति, देवताओं के गुरु हैं और वैदिक ज्योतिष में सबसे शुभ ग्रह माने जाते हैं। परंपरा के अनुसार गुरु बीज मंत्र ज्ञान, अच्छे मार्गदर्शन, पढ़ाई में सफलता, संतान, सुखी वैवाहिक जीवन और स्थिर समृद्धि के लिए जपा जाता है।

इसका दिन गुरुवार है। बहुत से लोग सुबह पीले वस्त्र पहनकर इसका जाप करते हैं और हल्दी, चने की दाल या पीले फूल अर्पित करते हैं; गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करना भी इस साधना का हिस्सा माना जाता है।

पूजा: भगवान विष्णु, बृहस्पति देव और आपके गुरु

दान: गुरुवार को चने की दाल, हल्दी, केले, पीला वस्त्र या किताबें

रुद्राक्ष: 5 मुखी

रंग: पीला

आचरण: गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करें, ज्ञान बाँटें, शिक्षा में सहयोग करें और अपने मूल्यों पर जिँ: गुरु ज्ञान और उदारता से मज़बूत होते हैं।

astroanktara.com पर पढ़ें: कृष्ण चालीसा (astroanktara.com/hi/chalisa/krishna-chalisa) और गुरु बीज मंत्र (- astroanktara.com/hi/mantra/guru-beej-mantra)।

शुक्र Venus

कारण: आपके बारहवें भाव में।

बीज मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ॥

रोज़ 108 बार (एक माला) जाप करें, या कम से कम हर शुक्रवार को। पूरा पारंपरिक अनुष्ठान 16,000 जाप, यानी लगभग 149 माला, 40 दिनों में।

शुक्र प्रेम, सौंदर्य, कला और सुख-सुविधाओं का ग्रह है और दैत्यों के गुरु माने जाते हैं। परंपरा के अनुसार शुक्र बीज मंत्र प्रेम और दांपत्य जीवन में सामंजस्य, रचनात्मकता, कला में सफलता और सुखी, सुरुचिपूर्ण जीवन के लिए जपा जाता है।

इसका दिन शुक्रवार है। बहुत से लोग सुबह सफ़ेद या हल्के रंग के वस्त्र पहनकर इसका जाप करते हैं, और कुछ लोग माँ लक्ष्मी की उपासना भी करते हैं; सफ़ेद मिठाई, चावल या फूल अर्पित करना पारंपरिक है।

पूजा: माँ लक्ष्मी और माँ दुर्गा

दान: शुक्रवार को चावल, चीनी, घी, सफ़ेद वस्त्र या इत्र

रुद्राक्ष: 6 मुखी

रंग: सफ़ेद, क्रीम और गुलाबी

आचरण: स्त्रियों का सम्मान करें, आसपास साफ़-सुथरा और सुंदर रखें, कलाओं का आनंद संयम से लें और रिश्तों में वफ़ादार रहें: शुक्र शालीनता से मज़बूत होते हैं।

astroanktara.com पर पढ़ें: लक्ष्मी चालीसा (astroanktara.com/hi/chalisa/lakshmi-chalisa) और शुक्र बीज मंत्र (- astroanktara.com/hi/mantra/shukra-beej-mantra)।

उपाय मेहनत और अच्छे आचरण का सहारा हैं; ये चिकित्सा, क़ानूनी या आर्थिक सलाह की जगह नहीं लेते।

24

रत्न और शुभ बातें

रत्न पारंपरिक रूप से आपके लग्न के स्वामी (जीवन रत्न), पाँचवें भाव के स्वामी (भाग्य रत्न) और नौवें भाव के स्वामी (कारक रत्न) से चुने जाते हैं: ये ग्रह आपकी कुंडली के लिए शुभ हैं, इसलिए इनके रत्न पहने से मदद कर रही चीज़ों को मज़बूत करते हैं।

जीवन रत्न: पन्ना

धातु: सोना · उँगली: कनिष्ठा · पहली बार पहनें: बुधवार

आपके लग्न का स्वामी: बुध

भाग्य रत्न: नीलम

धातु: चाँदी या पंचधातु · उँगली: मध्यमा · पहली बार पहनें: शनिवार

आपके पाँचवें भाव का स्वामी: शनि

कारक रत्न: हीरा या सफ़ेद पुखराज

धातु: चाँदी या प्लैटिनम · उँगली: मध्यमा या अनामिका · पहली बार पहनें: शुक्रवार

आपके नौवें भाव का स्वामी: शुक्र

पूरी कुंडली और चल रही दशा देखकर ही रत्न पहनें; नीलम और गोमेद को पहले कुछ दिन आजमाएँ। प्राकृतिक, बिना उपचार वाले रत्न चुनें, बताए गए दिन छोटी सी प्रार्थना के बाद पहनें, और तबीयत ठीक न लगे तो उतार दें।

शुभ बातें

शुभ अंक

5, 8

शुभ दिन

बुधवार, शनिवार

शुभ रंग

हरा; गहरा नीला, काला

चंद्र राशि

कुंभ

25

आपके अंक: मूलांक और भाग्यांक

मूलांक

6

आकर्षक, कलाप्रेमी और सुख-सुविधा व परिवार को समर्पित

भाग्यांक

8

धैर्य, मेहनत और देर से लेकिन टिकाऊ सफलता का भाग्य

26

इस रिपोर्ट के बारे में

आपके जन्म विवरण से निरयण राशिचक्र (लाहिड़ी अयनांश), मध्यम राहु-केतु और संपूर्ण राशि भाव पद्धति से गणना की गई है। ग्रहों की स्थिति प्रतिष्ठित पंचांग सॉफ्टवेयर से जाँची गई है। समय की गणना विशिष्ट दशा और गुरु के गोचर को मिलाकर की गई है।

ज्योतिष आत्मचिंतन और आत्म-समझ की परंपरा है। यह रिपोर्ट तय घटनाओं की भविष्यवाणी नहीं है और चिकित्सा, कानूनी, वित्तीय या मनोवैज्ञानिक सलाह का विकल्प नहीं है। महत्वपूर्ण फैसले सोच-समझकर और ज़रूरत हो तो विशेषज्ञ की मदद से लें।

रिपोर्ट के बारे में कोई सवाल? hello@astroanktara.com पर लिखें।